# मेरीखेती

जून, 2024 | मुल्य: रु49

www.merikheti.com

# विषय सूची


सम्पादकीय

सलाहकार मंडल

| | |
|---|---|
| खेत खलियान | 01 - 11 |
| बागवानी फसलें | 12 - 20 |
| मशीनरी | 21 - 26 |
| मौसमी व अन्य कृषि सुझाव | 27 - 28 |
| औषधीय खेती | 29 - 31 |
| पशुपालन–पशुचारा | 32 - 34 |



विज्ञापन के लिए संपर्क करें : 91-9899991906, 91-8800777501

# सम्पादकीय

## कृषि में नवाचार: सतत विकास की कुंजी

हमारा देश कृषि प्रधान देश है और हमारी अर्थव्यवस्था का बड़ा हिस्सा कृषि पर निर्भर है। इस संदर्भ में, किसानों का जीवन और उनकी खेती की पद्धतियों में सुधार लाना अत्यंत आवश्यक है। वर्तमान में, जब हम सतत विकास की बात करते हैं, तो कृषि में नवाचार एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। नवाचार न केवल किसानों की आय बढ़ाने में सहायक है, बल्कि यह पर्यावरण संरक्षण और खाद्य सुरक्षा में भी अहम योगदान देता है।

स्मार्ट कृषि तकनीकों का उपयोग तेजी से बढ़ रहा है। ड्रोन, सैटेलाइट इमेजिंग, और सेंसर जैसे उपकरणों का उपयोग फसलों की निगरानी और प्रबंधन के लिए किया जा रहा है। यह तकनीकें किसानों को सटीक जानकारी प्रदान करती हैं, जिससे वे समय पर सही निर्णय ले सकते हैं और उत्पादन बढ़ा सकते हैं।

जैविक खेती के महत्व को अब पूरी दुनिया में पहचाना जा रहा है। रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के उपयोग से होने वाले नुकसान को देखते हुए, जैविक खेती एक स्थायी और सुरक्षित विकल्प है। इससे न केवल मिट्टी की गुणवत्ता में सुधार होता है, बल्कि उपभोक्ताओं को भी स्वास्थ्यवर्धक खाद्य पदार्थ प्राप्त होते हैं।

जल संकट एक गंभीर समस्या है, खासकर कृषि क्षेत्र में। नई सिंचाई प्रणालियाँ, जैसे ड्रिप इरिगेशन और स्प्रिंकलर सिस्टम, जल के उपयोग को अधिक प्रभावी और किफायती बनाती हैं। यह प्रणाली न केवल पानी की बचत करती है, बल्कि फसल उत्पादन को भी बढ़ावा देती है।

कृषि क्षेत्र में नवाचार को प्रोत्साहित करने के लिए सरकार और निजी संस्थानों को मिलकर काम करना होगा। किसानों को नवीनतम तकनीकों और पद्धतियों के बारे में जागरूक करना, उन्हें प्रशिक्षण देना और आर्थिक सहायता प्रदान करना आवश्यक है। इसके साथ ही, सामुदायिक स्तर पर भी किसानों के बीच सहयोग और ज्ञान साझा करने की भावना को बढ़ावा देना होगा

धन्यवाद,

श्री दिलीप यादव
संपादक, मेरीखेती

# सलाहकार मंडल

**श्री छेदालाल पाठक**
संरक्षक मार्गदर्शक

**श्री कृष्ण पाठक**
फाउंडर, मेरीखेती

**डॉ एम सी शर्मा**
सेवानिवृत्त निदेशक एवं कुलपति आईवीआरआई
इज्जतनगर

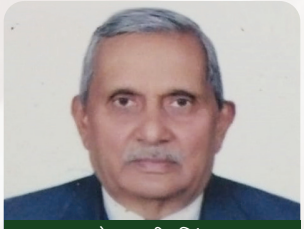

**प्रो. ए पी सिंह**
पूर्व कुलपति, वेटरनरी विश्व विद्यालय,
मथुरा

**डॉ. एस. के. गर्ग**
कुलपति राजस्थान यूनिवर्सिटी ऑफ
वेटरनरी एंड एनिमल साइंस

**डॉ हरि शंकर गौड़**
पूर्व कुलपति एसबीबीपीयूएटी, मेरठ, साइंटिस्ट,
गलगोटिया विश्वविद्यालय

**डॉ. ओमवीर सिंह**
निदेशक बीज प्रमाणीकरण ( सेवानिवृत्त )
उत्तर प्रदेश

**डॉ उदय भान सिंह**
डीन कृषि महाविद्यालय, कुम्हेर, भरतपुर,
राजस्थान

**डॉ जे.पी.एस. डबास**
वरिष्ठ वैज्ञानिक आई ए आरआई

**डॉ एसके सिंह**
प्रोफेसर सह मुख्य वैज्ञानिक डॉ. राजेंद्र प्रसाद
केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा बिहार

**डॉ रितेश शर्मा**
प्रधान वैज्ञानिक, बासमती निर्यात विकास फाउंडेशन
(एपीडा, वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार)

**डॉ सी बी सिंह**
एक्स – सीनियर साइंटिस्ट, IARI, पूसा

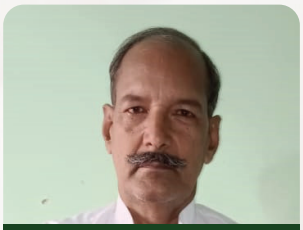

**तेजपाल सिंह**
प्रगतिशील किसान

# धान की फसल में लगने वाले प्रमुख रोग और उनकी रोकथाम के उपाय

धान की खेती भारत में खरीफ के मौसम में बड़े पैमाने पर की जाती है। भारत में धान की बुवाई बड़े क्षेत्र में की जाती है। अन्य देशों में धान की उपज में वृद्धि हो रही है जो की हमरे देश में बहुत कम है। धान की उपज कई कारकों से प्रभावित होती है जिन में से सबसे बाद कारक है इसमें लगने वाले खतरनाक रोग, फसल में रोगों के प्रभाव के कारण उपज आधी से भी कम होती है। इसलिए आज के इस लेख में हम आपके लिए धान के रोगों से संबंधित सम्पूर्ण जानका. री लेके आए है, जिससे की आप समय रहते इन रोगों को पहचान कर इनका उपचार कर सकते है।

## धान की फसल में लगने वाले प्रमुख रोग और उनका नियंत्रण

### भूरा धब्बा रोग

ये रोग हेलमिनथोस्पोरियम ओरायजी जीवाणु के कारण होता है जो की फसल की उपज को बहुत प्रभावित करता है। इस रोग के लक्षण पौधे के सभी ऊपरी भागो पर देखने को मिलते है । तनों पत्तियों एवं बालियों पर बहुत सारे अण्डाकार स्लेटी धब्बे दिखाई देते है जो बाद में भूरे हो जाते है। इस रोग में आपस में धब्बे मिलकर बड़े धब्बे बना लेते है। रोग का अधिक प्रकोप होने पर पौधे उकठकर मर जाते है। पौधे के विकास के साथ में बालियों का विकास भी रूक जाता है और बालियों में दाने नहीं बनते है। फसल की किसी भी अवस्था में यह रोग हो सकता है। रोग से प्रभावित पौधों में दाने की गुणवत्ता कम हो जाती है जिससे फसल का रेट भी अच्छा नहीं लगता है।

### भूरा धब्बा रोग के नियंत्रण के उपाय

- इस रोग की जड़ को खतम करने के लिए केवल प्रतिरोधक किस्मों का उपयोग करें।
- खेत में पूर्स्च्छ खेती करें।
- फसल चक्र अपनाए।
- रोपण की तिथि में बदलाव करें।
- उचित मात्रा में उर्वरकों का उपयोग करें।
- उपयुक्त जल प्रबंधन करें।
- पोटाश की कमी की पूर्ति के लिए पोटाश युक्त उर्वरकों का उपयोग करें।
- भूरा धब्बा रोग के नियंत्रण के थाईरम 2.5 ग्राम प्रति कि.ग्रा. बीज से उपचारित करें या कार्बेंडाजिम 1.5 ग्रा./ कि.ग्रा. बीज से उपचारित करें।
- मेनेकोजेब 0.25 प्रतिशत की दर से 10 से 15 दिन के अंतराल में लक्षण दिखते ही छिड़काव करें।

### बेक्टीरियल लीफ ब्लाइट (जेन्थोमोनस केम्पेस्ट्रिस)

बेक्टीरियल लीफ ब्लाइट रोग को हिंदी में जेन्थोमोनस केम्पेस्ट्रिस रोग के नाम से जाना जाता है जो की जेन्थोमोनस केम्पेस्ट्रिस जीवाणु के कारण होता है। इस रोग में पत्तियों पर पानीदार धब्बे बनते है। धब्बों के आसपास चिपचिपी बूंदे जमा होती है। रोग से ग्रसित पौधों की पत्तियां पीला से नांरगी भूरी हो जाती है। छोटे धब्बे मिलकर पत्तियों की सतह पर बड़े धब्बे बन जाते है। ये रोग फसल को विकराल रूप में प्रभावित करता है।

बेक्टीरियल लीफ ब्लाइट रोग के लक्षण दो भागों में दिखाई देते है। क्रेसिक फेस और ब्लाइट फेस इन दोनों में लक्षण अलग अलग होते है। क्रेसिक भाग पौधे की प्रांरभिक अवस्था में मुरझाकर सुख जाते है। बाद की अवस्था में ब्लाइट फेस के लक्षण दिखते है जो पत्ती के ऊपर और किनारे में दिखाई पड़ते है, ये धीरे धीरे बढ़कर बड़े एवं लम्बे धब्बे बन जाते है। जैसे – जैसे रोग आगे बढ़ता है, जल्दी ही धब्बे पीले से सफेद हो जाते है।

### बेक्टीरियल लीफ ब्लाइट रोग के नियंत्रण के उपाय

- सबसे पहले बुवाई के लिए रोग मुक्त बीजों का उपयोग करें इससे ही इस रोग का रोकथाम किया जा सकता है।
- इस रोग को खड़ी फसल में नियंत्रित करने के लिए 5 ग्राम स्ट्रेपटोसाइक्लीन 500 लीटर पानी में प्रति हेक्टेयर की दर से रोग की शुरूवात में छिड़काव करें।
- अच्छा नियंत्रण प्राप्त करने के लिए बाद में 09–12 दिन के अंतराल से छिड़काव फिर से दोहराए।

### खैरा रोग

धान की फसल में ये रोग भी बहुत नुकसान करता है जिस कारण से फसल की उपज की  कम हो जाती है। इस रोग की क्षति की बात करे तो ये रोग मुख्य रूप से  जस्ते की कमी से होता है। इस रोग के लक्षण नर्सरी में ही दिखाई देने लग जाते है। इस रोग के सबसे पहले लक्षण नर्सरी में पौधे का पीला पड़ना है। रोग से संक्रमित पौधे पर पत्तों के बीच वाली शिरा के पास पीलापन दिखाई देता है। जिससे की पौधों की बढ़वार रूक जाती है। संक्रमण अधिक होने पर पौधे सुख जाते है।

### खैरा रोग के नियंत्रण के उपाय

- नर्सरी के पौधों को बोने से पहले 1 से 2 मिनट तक जिंक सल्फेट के 0.2 प्रतिशत घोल में भिगाए।
- रोग की रोकथाम के लिए  बीज को बोने से पहले रात भर जिंक सल्फेट के 0.4 प्रतिशत घोल में भिगाए। या जिंक सल्फेट 5 कि.ग्रा. और चूना 2.5 कि.ग्रा. का छिड़काव करें।
- जिंक सल्फेट 5 कि.ग्रा. और चूना 2.5 कि.ग्रा. का पहला छिड़काव नर्सरी में बोने के 10 दिन बाद करें।दूसरा छिड़काव बोनी के 20 दिन बाद करे और
- तीसरा छिड़काव रोपणी के 15 से 30 दिन बाद करें।

### फाल्स स्मट या आभासी कंडवा रोग

ये रोग यूसलीगनीओइड विरेन्स जीवाणु से होता है। धान की फसल का ये सबसे घातक रोग माना जाता है। रोग फूल आने के बाद में दिखता है। इस रोग में बालियों में दाने हरे काले हो जाते है। संक्रमित दाने छिद्र युक्त चुर्ण से ढके रहते है। हवा से उड़कर यह स्वस्थ फूलों को भी संक्रमित कर देते है। अधिक संक्रमण होने पर सारे दाने खराब हो जाते है।

### फाल्स स्मट या आभासी कंडवा रोग के नियंत्रण के उपाय

- इस रोग को पूरी तरह से नियंत्रित करने के लिए दो से तीन साल के लिए फसल चक्र अपनाए।
- गहरी जुताई से भूमि में गिरे स्केलोरेशिया नष्ट हो जाते है।
- संक्रमित दाने एवं पौधों को नष्ट करें, संक्रमित पौधों से बीज न इकटठा करें।
- प्रोपेकोनोजोल ( टिल्ट) 1 मि.ली. प्रति लीटर या क्लोरो. थोलोनिल 2 ग्राम प्रति लीटर की दर से फूल निकलने समय छिड़काव करें।
- दूसरा छिड़काव फूल पूरी तरह से आने के बाद करें।
- पोटाश उर्वरकों को डाले।

## Red Gram Farming: अरहर की खेती कैसे की जाती है?

अरहर की खेती भारत में एक महत्वपूर्ण खेती है और यह फसल अनेक क्षेत्रों में उगाई जाती है। अरहर खरीफ की प्रमुख फसल है, इसकी खेती ज्यादतर इसी मौसम में की जाती है। इसकी दाल की कीमत अच्छी खासी होती है। अरहर की खेती (Red gram farming) कम वर्षा वाले क्षेत्रों में भी आसनी से की जा सकती है, इसलिए इसको कम वर्षा वाले क्षेत्रों की दाल के रूप में भी जाना जाता है। भारत में ये अरहर आंध्र प्रदेश, गुजरात, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, महाराष्ट, उत्तर प्रदेश के बुंदेलखंड, पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार में बड़े पैमाने पर उगाई जाती है। आज के इस लेख में हम आपको अरहर की फसल उत्पादन के बारे में विस्तार में जानकारी देंगे।

## भारत में अरहर की खेती (Cultivation of redgram in India)

अरहर भारत की एक महत्वपूर्ण दलहनी फसल है। इसे अरहर, TUR और Red gram के नाम से भी जाना जाता है। अरहर की खेती और खपत मुख्य रूप से विकासशील देशों में की जाती है। यह फसल भारत में व्यापक रूप से उगाई जाती है। भारत विश्व में अरहर का सबसे बड़ा उत्पादक और उपभोक्ता है।

## अरहर का वानस्पतिक विवरण (Botanical Description of red gram)

अरहर एक दलहनी फसल है इसका वानस्पतिक नाम (Botanical name) Cajanus cajan है। इसकी उिपसल यानि की इसका परिवार Leguminosae है। अरहर एक दलहनी फसल है, जो की वातावरण की नाइट्रोजन का जमीन में स्थिरीकरण करती है। अरहर के फूल स्व–परागण self & pollinated होते हैं लेकिन इसमें क्रॉस–निषेचन (cross & fertilization) भी होता है। अरहर के बीज गोल या लेंस के आकार के होते हैं। अरहर की दो प्रजातियाँ (species) होती है। इनको ऊंचाई, बढ़वार की आदत, परिपक्वता का समय, रंग, आकार, भिन्न फली और बीज के आकार के आधार पर दो species में बांटा गया है। ये दो प्रजातियाँ है –

- Cajanus cajan var- bicolor में देर से पकने वाली, लम्बी झाड़ीदार किस्में शामिल हैं, इसके पौधे और शाख. ाओं के अंत में फूल लगते हैं। फली अपेक्षाकृत लंबे होती हैं और इनमें 4–5 बीज होते हैं।
- Cajanus cajan var- flavu इस समूह में छोटी, जल्दी पकने वाली किस्में शामिल हैं और इसमें शाखाओं के साथ कई बिंदुओं पर पौधे और फूल होते है। फलियाँ भी छोटी होती हैं फलियों में 2–3 बीज होते हैं।

## अरहर की खेती के लिए उपयुक्त मिट्टी

अरहर की खेती के लिए गर्म तथा आर्द्र जलवायु की आवश्यकता होती है। इसके लिए मौसम (जून से अक्टूबर) और बरसात के बाद (नवंबर से मार्च) के मौसम में 17 डिग्री C से 22 डिग्री C तापमान की आवश्यकता होती है। अरहर फली के विकास के समय खराब मौसम के प्रति बहुत संवेदनशील होता है, इसलिए फूल आने के दौरान मानसून और बादलों का मौसम खराब फली निर्माण का कारण बनता है।

इसकी खेती मुख्य रूप से खरीफ की फसल के रूप में की जाती है। हर प्रकार की जमीनों में इसकी खेती की जा सकती है। अरहर (Red gram) की खेती के लिए उपजाऊ और बढ़िया जल निकास वाली दोमट जमीन सब से बढ़िया है। मिट्टी का pH 6.5–7.5 तक होना चाहिए।

## अरहर की उन्नत किस्में कौनसी है?

अरहर की अच्छी पैदावार पाने के लिए अच्छी किस्मों की बुवाई करना बहुत आवश्यक है। इसके उन्नत किस्मे इस प्रकार है – 'Parbhat', 'UPAS 120', 'T 21', 'Pusa Ageti', 'Pusa 74', 'Pusa 84', 'Pant A 1', 'Pant A 2', 'HPA 1', 'TT 5', 'AL 15', 'Manak', 'H 77&216', 'Sagar' ('H 77&208'), 'BS 1', 'Sharda' ('S 8'), 'Mukta' ('R 60') = 'Shard', 'Mukta', 'C 11', 'C 36', 'BDN 1', 'BDN 2', 'No-148', 'Khargone 2', 'T 15&15', 'PT 301', 'JA 3', 'No-84', 'No-290&21', 'Hyderabad 185' आदि।

## अरहर की बुवाई के लिए भूमि की तैयारी

अरहर की खेती करने के लिए सबसे पहले भूमि की अच्छे से जुताई आवश्य कर ले। सबसे पहले खेत की चसवनही की सहयता से भूमि की अच्छे से गहरी जुताई कर ले, इसके बाद में हैरो या कल्टीवेटर से भूमि को जोत कर मिलत्ती को भुरभुरा बना ले इसके बाद पता लगाकर खेत की जमीन को बराबर कर ले।

## अरहर की बुवाई का समय और बीज की मात्रा

अरहर की बुवाई का समय किस्म के आधार पर तय किया जाता है। जल्दी पकने वाली किस्मों की बुवाई जून के पहले पखवाड़े में की जाती है। मध्यम और देर से पकने वाली किस्मों की बुवाई जून के दूसरे पखवाड़े में की जाती है। सीड ड्रिल या देसी हल या रिज पर डिबलिंग द्वारा लाइन बुवाई की जाती है। जल्दी पकने वाली किस्मों के लिए 20–25 कि.ग्रा.ध्हेक्टेयर बीज का इस्तेमाल करे। पंक्ति से पंक्ति की दुरी 45–60 से.मी. और पौधे से पौधे की दुरी 10–15 से.मी. रखे। मध्यमध्देर से पकने वाली किस्मों के लिए 15–20 कि.ग्रा.ध्हेक्टेयर बीज का इस्तेमाल करे। पंक्ति से पंक्ति की दुरी 60–75 और पौधे से पौधे–15–20 से.मी. रखे। बीज की बुवाई से पहले बीज उपचार अवश्य कर ले इसकी बुवाई के लिए कवकनाशी जैसे – थीरम (2 ग्राम). कार्बेन्डाजिम (1 ग्राम) या थीरम / 3 ग्राम या ट्राइकोडर्मा विर्डी 5– 7 ग्रामधकि.ग्रा. बीज की दर से इस्तेमाल करें।

## अरहर की फसल में फर्टिलाइजर और खाद प्रबंधन

फसल में मृदा परीक्षण के परिणामों के आधार पर उर्वरकों की मात्रा का निर्धारण करना चाहिए। अरहर की खेती में बुवाई के समय सभी उर्वरक 5 से.मी. की गहराई पर खांचे में ड्रिल किया जाता है। बुवाई के समय 25–30 किलोग्राम नाइट्रोजन, 40–50 किलोग्राम P2O5, 30 किलोग्राम K2O प्रति हेक्टेयर बेसल खुराक के रूप में फसल में डालें। मध्यम काली मिट्टी और बलुई दोमट मिट्टी में सल्फर 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर डालें। रेतीली मिट्टी में 3 कि.ग्रा. Zn प्रति हेक्टेयर (15 कि.ग्रा. जिंक सल्फेट हेप्टा हाइड्रेट/9 कि.ग्रा. जिंक सल्फेट) डालें बेसल के रूप में। खड़ी फसल में जिंक की कमी पाए जाने पर 5 किग्रा जिंक सल्फेट. चूना 2.5 किग्रा 800–1000 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर का छिड़काव कर सकते हैं।

## अरहर की खेती में सिंचाई प्रबंधन

अरहर एक गहरी जड़ वाली फसल है, इसलिए सूखे को सहन कर सकती है। लेकिन लंबे समय तक सूखे की स्थिति में तीन बार सिंचाई की जरूरत होती है। पहली शाखन अवस्था में (बुवाई के 30 दिनों के बाद), दूसरी पुष्पन अवस्था में (बुवाई के 70 दिनों के बाद) और तीसरी पोडिंग अवस्था में (बुवाई के 110 दिनों के बाद) अरहर सफल होने के लिए उचित जल निकासी की जरूरत होती है। मेड़ रोपण खराब उप–सतही जल निकासी वाले क्षेत्रों में काम करता है। यह जड़ों को अधिक वर्षा के दौरान पर्याप्त वातन प्रदान करता है।

## अरहर की फसल में खरपतवार नियंत्रण

अरहर की फसल में खरपतवार के लिए पहले 60 दिन महत्वपूर्ण और घातक हैं। दो यांत्रिक निराई होती हैरू पहली 20 से 25 दिन पर और दूसरी 45 से 50 दिन बाद लेकिन फूल आने से पहले। प्रति हेक्टेयर 400 से 600 लीटर पानी में पेंडीमिथालिन 0.75 से 1 कि.ग्रा. ंप. का प्रीइमरजेंस मिलाएं। ये खरपतवारनाशी उगने वाले खरपतवारों को मार डालता है और खेत को पहले 50 दिनों तक खरपतवारों से सुरक्षित रखता है।

## फसल की कटाई

- फसल पकने से पहले कटाई करने से आमतौर पर कम पैदावार होती है, जिसका अनुपात अधिक होता है।
- अरहर की कटाई में देरी से फलियाँ टूट जाती हैं और अधिक नुकसान होता है।
- प्रतिकूल मौसम की स्थिति यानी बारिश और बादल छाए रहने वाला मौसम भी कटाई के लिए ठीक नहीं होता है।
- फसल काटने का सबसे अच्छा समय, जब बड़ी (80) प्रतिशत फलियाँ पूरी तरह पक जाती हैं।
- सही प्रकार के फसल कटाई उपकरण (दरांती) का प्रयोग न करना।
- कटाई से पहले कीट संक्रमण से बचें।
- काटने के बाद, यदि मौसम अनुमति देता है, तो कटे हुए तनों को खेत में सूखने के लिए छोड़ दें।
- फलियों को छड़ी से पीटकर या पुलमैन थ्रेशर का उपयोग करके थ्रेशिंग की जाती है। बीज और फली का अनुपात आम तौर पर 50–60% होता है।
- बीजों में नमी की मात्रा 9–10% तक लाने के लिए साफ बीजों को 3–4 दिनों तक धूप में सुखाना चाहिए। इसके बाद उचित भंडार घर में सुरक्षित रूप से स्टोर करें। ब्रुचिड्स और अन्य भंडारण के आगे विकास से बचने के लिए कीट, मानसून की शुरुआत से पहले और फिर से भंडारण सामग्री को फ्यूमिगेट करने की सिफारिश की जाती है।

# ज्वार की खेती: उपज, प्रबंधन और बेहतर बुआई के तरीके

ज्वार की फसल खरीफ (वर्षा ऋतु) और रबी (वर्षा ऋतु के बाद) में उगाया जाता है, लेकिन खरीफ का हिस्सा खेती और उत्पादन दोनों के तहत क्षेत्र के मामले में अधिक है। रबी की फसल लगभग पूरी तरह से मानव उपभोग के लिए उपयोग की जाती है जबकि खरीफ की फसल मानव उपभोग के लिए बहुत लोकप्रिय नहीं है और बड़े पैमाने पर पशु चारा, स्टार्च और शराब उद्योग के लिए उपयोग की जाती है।

भारत में ज्वार के तहत केवल 5% क्षेत्र सिंचित है। देश में ज्वार की खेती के तहत 48% से अधिक क्षेत्र महाराष्ट्र और कर्नाटक में है।

## ज्वार की फसल के लिए उत्तम तापमान और जलवायु

मूल रूप से, ज्वार एक उष्णकटिबंधीय फसल है। ज्वार 25°C और 32°C के बीच तापमान में अच्छी तरह से पनपता है लेकिन 16°C से कम तापमान फसल के लिए अच्छा नहीं होता है। ज्वार की फसल के लिए लगभग 40 से.मी. वार्षिक वर्षा की आवश्यकता होती है। ज्वार अत्यधिक सूखा–सहिष्णु फसल है और शुष्क क्षेत्रों के लिए अनुशंसित है। ज्वार की खेती के लिए बहुत अधिक नम और लंबे समय तक शुष्क परिस्थितियां उपयुक्त नहीं होती हैं।

## ज्वार की फसल के लिए मिट्टी की आवश्यकता

ज्वार की फसल मिट्टी की विस्तृत श्रृंखला को अपनाती है लेकिन अच्छी जल निकासी वाली रेतीली दोमट मिट्टी में अच्छी तरह से बढ़ती है। 6 से 7.5 की मिट्टी की पीएच सीमा इसकी खेती और बेहतर वृद्धि के लिए आदर्श है। खरपतवार मुक्त बुवाई के लिए मुख्य खेत की जुताई करके उसे अच्छी तरह से समतल कर लेना चाहिए।

## ज्वार की फसल की बुवाई के लिए भूमि तैयार कैसे करें?

लोहे के हल से खेत की एक बार (या) दो बार जुताई करें। ज्वार को अच्छी जुताई की आवश्यकता नहीं होती है क्योंकि यह सीधे बोई गई फसल के मामले में अंकुरण और उपज पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है।

## ज्वार की फसल की बुवाई और बीज की मात्रा

### ज्वार की प्रत्यारोपित फसल

जब पौधे 15 से 18 दिन के हो जाएं तो उन्हें निकाल लें। एजो. स्पिरिलम के 5 पैकेट (1000 ग्राम/हेक्टेयर) और फॉस्फोबैक्टीरिया के 5 पैकेट (1000 ग्राम/हेक्टेयर) या 40 लीटर में एजोफॉस (2000 ग्राम/हेक्टेयर) के 10 पैकेट के साथ घोल तैयार करें। पानी का और 15–30 मिनट के लिए घोल में रोपाई के जड़ वाले हिस्से को डुबोएं और रोपाई करें।

- खांचों के माध्यम से पानी जाने दें।
- हर टीले पर एक पौधा लगाएं।
- पौध को 3 से 5 सेंटीमीटर की गहराई पर रोपें।
- मेड़ के ऊपर और नीचे से आधी दूरी पर मेड़ के किनारे पर पौधे रोपें।
- पंक्ति में पौधों के बीच 15 से.मी. की दूरी बनाए रखें जो 45 से.मी. (15/मी2) अलग हों।

## ज्वार सीधी बुवाई की जाने वाली फसल के लिए बीज की मात्रा

- ज्वार की शुद्ध फसल के मामले में, बीज दर 10 किग्रा/हेक्टेयर बनाए रखें।
- दलहनी फसल के साथ ज्वार की अंतर फसल की दशा में ज्वार की बीज दर 10 कि.ग्रा./हेक्टेयर तथा दलहनी फसल की दर 10 कि.ग्रा./हेक्टेयर बनाए रखें।
- ज्वार की शुद्ध फसल के मामले में, बीजों के बीच 15 से.मी. की दूरी के साथ पंक्तियों में बोएं जो 45 सेमी अलग हैं। यदि शूटफ्लाई का हमला होता है, तो साइड शॉट्स को हटा दें और एक स्वस्थ शूट को बनाए रखें।
- बीजों को उन पंक्तियों के ऊपर बोएं जहां उर्वरक रखे जाते हैं।
- बीजों को 2 सेंटीमीटर की गहराई पर बोएं और मिट्टी से ढक दें।
- दलहनों के साथ ज्वार के मामले में दलहनों की एक पंक्ति के साथ बारी–बारी से ज्वार की एक जोड़ी पंक्ति बोएं। ज्वार और दलहनी फसल की कतार के बीच की दूरी 30 से.मी. रखें।

## ज्वार की फसल में कतार से कतार और पंक्ति से पंक्ति में पौधों का प्रबंधन

अगर ज्यादा पौधे उग जाते है तो पौधे से पौधे की दुरी बनाये रखे के लिए पोधो की छटाई करें और जहा बीज नहीं उगे वहा पौधों से खाली जगह भरें। बुवाई के 23वें दिन पहली निराई के बाद पौधों के बीच 15 सेंटीमीटर की दूरी बनाए रखें। लोबिया को छोड़कर सभी दलहनी फसलों के लिए दलहनी फसल को पौधों के बीच 10 सेंटीमीटर की दूरी पर पतला करें, जिसके लिए पौधों के बीच की दूरी 20 सेंटीमीटर रखी जाती है।

## ज्वार की फसल में उर्वरक और पोषण प्रबंधन

ज्वार की फसल की दो तरीकों से बुवाई की जाती है।बुवाई के तरीके के हीसाब से ही फसल में पोशाक तत्वों की व्यवस्था या प्रबंधन किया जाता है। ज्वार की बुवाई के दो तरीके है एक तो नर्सरी तैयार करके खेत में पौध रोपण करना और सीधी बुवाई।

## रोपित फसल में पोषण और उर्वरक प्रबंधन

मृदा परीक्षण संस्तुतियों के अनुसार एनपीके उर्वरकों का प्रयोग करें। यदि मृदा परीक्षण की सिफारिशें उपलब्ध नहीं हैं, तो 90 N, 45 P2O5, 45 K2O किग्राध्हेक्टेयर की व्यापक अनुशंसा अपनाएं। N @ 50:25:25% 0.15 और 30 DAS पर लगाएं और रोपण से पहले P2O5 और K2O की पूरी खुराक दें। मेड़ बोई गई फसल के मामले में, मेड़ के ऊपर से दो तिहाई दूरी पर मेड़ के किनारे 5 से.मी. गहरा एक खांचा खोलें और खाद के मिश्रण को खांचे के साथ रखें और 2 से.मी. तक मिट्टी से ढक दें। एजोस्पिरिलम का 10 पैकेट (2 कि.ग्रा./हेक्टेयर) और 10 पैकेट (2000 ग्राम/हेक्टेयर) फॉस्फोबैक्टी. रिया या 20 पैकेट एजोफोस (4000 ग्राम/हेक्टेयर) को
25 कि.ग्रा. एफवाईएम. 25 कि.ग्रा. बुवाईध्रोपाई से पहले मिट्टी में मिलाया जा सकता है।

## सीधी बोई गई फसल में पोषण और उर्वरक प्रबंधन

जहाँ तक संभव हो, मृदा परीक्षण संस्तुतियों के अनुसार एनपीके उर्वरकों का प्रयोग करें। यदि मृदा परीक्षण की सिफारिशें उपलब्ध नहीं हैं, तो 90 N, 45 P2O5, 45 K2O कि.ग्रा./हेक्टेयर की व्यापक अनुशंसा अपनाएं। N @ 50:25:25% 0.15 और 30 DAS पर लगाएं और P2O और K2O5 की पूरी खुराक बुवाई से पहले मूल रूप से लगाएं और यदि बेसल एप्लिकेशन संभव न हो तो उसे 24 घंटे के भीतर टॉप ड्रेसिंग किया जा सकता है। क्यारी में बोई गई फसल के मामले में, 5 से.मी. की गहराई और 45 से.मी. की दूरी पर रेखाओं को चिह्नित करें। उर्वरक मिश्रण को पंक्तियों के साथ 5 से.मी. की गहराई पर रखें। बिजाई से पहले कतारों को ऊपर से 2 सेंटीमीटर तक ढक दें। दलहनी फसल (काला चना, मूंग या लोबिया) के साथ मिश्रित फसल के रूप में उगाई गई ज्वार के मामले में 5 से.मी. की गहराई के अलावा 30 से.मी. की दूरी पर खुले खांचे बनाएं।दो कतारों में जिसमें ज्वार उगाना है, उर्वरक मिश्रण लगायें और 2 से.मी. तक ढक दें। तीसरी पंक्ति जिसमें दलहनी फसल उगानी है उसे छोड़कर अगली दो कतारों में उर्वरक मिश्रण डालकर 2 से.मी. तक मिट्टी से ढक दें। जैव–उर्वरकों का प्रयोगरू जब एजोस्पिरिलम का उपयोग किया जाता है तो सिंचित ज्वार के लिए संस्तुत एन का केवल 75: ही प्रयोग करें।

## ज्वार की फसल में सिंचाई का प्रबंधन

यदि फसल मानसून के समय (जुलाई) में बोई जाती है, तो बारिश के आधार पर 1 से 3 सिंचाई की आवश्यकता हो सकती है। गर्मी की फसलों में तापमान अधिक होने के कारण 6 से 7 सिंचाई की जा सकती हैं। हालाँकि, मान लीजिए कि केवल एक सिंचाई उपलब्ध है। ऐसी स्थिति में, इसे फूल आने के 10 दिनों के अंतराल पर (40–50 दिन) पहले, या डाइथेन एम 45 – 0.2%. बाविस्टिन 0.2% फूल आने के 10 दिनों के अंतराल पर दो बार लगाना चाहिए।

निर्दिष्ट उपज लक्ष्यों के लिए उर्वरक खुराक निर्धारित करने के लिए पश्चिमी और उत्तर पश्चिमी क्षेत्र जैसे अल्फीसोल, इनसेप्टिसोल और वर्टिसोल में मिट्टी परीक्षण आधारित उर्वरक सिफारिश को अपनाया जा सकता है।

## ज्वार की फसल में खरपतवार प्रबंधन

बुवाई के 3–5 दिनों के बाद एट्राजिन / 0.25 किग्राध्हेक्टेयर और उसके बाद मिट्टी की सतह पर बुवाई के 20–25 दिनों के बाद 2,4–D / 1 किग्रा / हेक्टेयर लागू करें, बैकपैक / नैपसैक / रॉकर स्प्रेयर का उपयोग करके फ्लैट फैन नोजल के साथ 500 का उपयोग करें। यदि शाकनाशियों का उपयोग नहीं किया जाता है, तो 10–15 डीएएस और 30–35 डीएएस पर दो बार हाथ से निराई करें। 3–5 DAS पर PE एट्राजीन 0.25 कि.ग्रा./ हेक्टेयर और उसके बाद 30–35 DAS पर एक हाथ से निराई करें।

कतार में बोई गई फसल में, 3–5 DAS पर
च्म एट्राजीन / 0.25 कि.ग्रा. / हेक्टेयर और उसके बाद 30–35 DAS पर ट्विन व्हील हो वीडर निराई करें।रोपित फसल में, पीई एट्राजीन / 0.25 कि.ग्रा. / हेक्टेयर 3–5 डीएटी पर और 2,4–डी / 1 कि.ग्रा. / हेक्टेयर 20–25 डीएटी पर डालें।यदि दलहनी फसल को ज्वार में अंतरफसल के रूप में उगाना है तो एट्राजीन का प्रयोग न करें, पीई पेंडीमिथालिन / 0.75 कि.ग्रा.ध्हेक्टेयर 3–5 डीएएस पर छिड़काव करें।

## ज्वार की फसल में रोग और कीट

ज्वार की फसलें कई कीड़ों और बीमारियों से ग्रस्त होती हैं। ज्वार में कीटध्पीड़क तना छेदक, प्ररोह मक्खी, और ज्वार मिज हैं। ज्वार मिज को नियंत्रित करने के लिए कार्बोफ्यूरान / मैलाथियान / 125 मिली / हेक्टेयर का छिड़काव करें। प्रारंभिक अवस्था में एन्थ्रेक्नोज रोग को नियंत्रित करने के लिए कार्बेन्डाजिम / 5 ग्रामध्लीटर पानी का छिड़काव करें। गर्मियों में बोई जाने वाली फसल में प्ररोह मक्खी का प्रकोप बहुत अधिक होता है। इसलिए, बुवाई के समय प्ररोह मक्खी को नियंत्रित करने के लिए इस कार्बोफ्यूरान 3जी / 3 से 4 कि.ग्रा./ हेक्टेयर का प्रयोग करना चाहिए।

तना छेदक कीट से बचाव या नियंत्रण के लिए फसल को जुलाई के मौसम में बोना चाहिए। एंडोसल्फान / 0.05% का छिड़काव 10 से 14 दिनों के अंतराल पर 2 से 3 बार करना भी प्रभावी होता है।

## फसल की कटाई और प्रसंस्करण

फसल की औसत अवधि पर विचार करें और फसल का निरीक्षण करें। जब फसल पक जाती है तो पत्तियाँ पीली पड़ जाती हैं और सूख जाती हैं और दाने सख्त और दृढ़ होते हैं।इस अवस्था में बालियों को अलग–अलग काटकर फसल की कटाई करें। एक सप्ताह के बाद भूसे को काट लें, इसे सूखने दें और फिर ढेर लगा दें। लंबी किस्मों के मामले में, तने को जमीन से 10 से 15 सेमी ऊपर काटें और बाद में बालियों को अलग करें और पुआल को ढेर कर दें बाद में बालियों को सुखा लें। एक यांत्रिक थ्रेशर का उपयोग करके या बालियों के ऊपर एक पत्थर के रोलर को खींचकर या मवेशियों का उपयोग करके और उपज को सुखाकर स्टोर करें।

## ज्वार की उपज

भारत दुनिया में ज्वार का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है, प्रति हेक्टेयर 1000 किलोग्राम की उपज दुनिया के प्रमुख ज्वार उत्पादक देशों में सबसे कम है। विश्व औसत 1435 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर है। यद्यपि भारत में ज्वार की उपज विश्व औसत से बहुत कम है, यह हाल के दिनों में लगातार बढ़ रहा है।

# उड़द की खेती: उन्नत किस्में, उपयुक्त जलवायु और बुवाई के तरीके

उड़द की खेती भारत में बड़े पैमाने पर की जाती है। उड़द की फसल एक दलहनी फसल के रूप में की जाती है। इसकी खेती मुख्य रूप से खरीफ के मौसम में की जाती है। दलहनी फसले शाकाहारी भोजन में प्रोटीन का सबसे आसान स्रोत हैं। उड़द इन दलहनी फसलों में बहुत महत्वपूर्ण है। उड़द में 23 से 27 प्रतिशत प्रोटीन होता है। प्रोटीन शरीर और मस्तिष्क के विकास और मरम्मत के लिए अत्यंत आवश्यक है। भोजन में प्रोटीन की कमी से बच्चों का शारीरिक विकास और मानसिक विकास प्रभावित होता है। ग्रीष्म ऋतु में कम समय में उड़द की फसल उगाकर अधिक फायदा ले सकते हैं। आज के इस लेख में हम आपको उड़द की फसल उत्पादन के बारे में सम्पूरण जानकारी देंगे।

## उड़द की खेती के लिए उपयुक्त जलवायु और मिट्टी

उड़द की खेती के लिए नम एवं गर्म जलवायु की आवश्यकता होती है। उड़द की अधिकतर जातियाँ प्रकाश के प्रति संवेदी है इसलिए उड़द की वृद्धि के लिए 25–30 डिग्री सेंटीग्रेट तापमान अच्छा होता है। 700–900 मि.मी. वर्षा वाले क्षेत्रों में उड़द उगाया जा सकता है। फूलों की अवस्था में अधिक वर्षा हानिकारक है। पकने के समय पर अधिक वर्षा दाना खराब कर देती है। ग्रीष्म कालीन और खरीफ दोनों खेती की जा सकती है। भूमि का चुनाव और प्रबंधन–उड़द की खेती कई तरह की जमीन पर होती है।उड़द के लिए सबसे अच्छा स्थान हल्की रेतीली, दोमट या मध्यम भूमि है, जहां पानी का निकास अच्छा है।पी.एच. मान 7–8 के बीच वाली भूमि उड़द के लिए उपजाऊ होती है। अम्लीय व क्षारीय भूमि उपयुक्त नही है। वर्षा आरम्भ होने के बाद दो–तीन बार हल या बखर चलाकर खेत को समतल करे। वर्षा आरम्भ होने के पहले बोनी करने से पौधो की बढ़वार अच्छी होती है।

## उड़द की उन्नत किस्में

अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए उन्नत किस्मों की ही बुवाई करनी चाहिए। उड़द की उन्नत किस्में निम्नलिखित है –

### 1. टी–9

उड़द की ये किस्म 70 – 75 दिनों में पक जाती है। उड़द की इस किस्म के बीज मध्यम छोटा, हल्का काला होता है और पौधा मध्यम ऊँचाई वाला होता है। इस किस्म की औसत पैदावार 10–11 क्विंटलध्हे है।

### 2. पंत यू–30

उड़द की ये किस्म 70 – 75 दिनों में पक जाती है। उड़द की इस किस्म के दाने काले मध्यम आकार के होते है और ये किस्म पीला मौजेक वायरस के क्षेत्रो के लिए उपयुक्त है। इस किस्म की औसत पैदावार 10–12 क्विंटलध्हे है।

### 3. खरगोन–3

उड़द की ये किस्म 85–90 दिनों में पक जाती है। उड़द की इस किस्म का दाना बड़ा हल्का काला और पौधा फैलने वाला होता है। इस किस्म की औसत पैदावार 8–10 क्विंटलध्हे है।

### 4. पी.डी.यू.–1(बसंत बहार)

उड़द की ये किस्म 70–80 दिनों में पक जाती है। उड़द की इस किस्म का दाना काला बड़ा और पौधा फैलने वाला होता है। इस किस्म की औसत पैदावार 12–14 क्विंटलध्हे है।

### 5. जवाहर उड़द–2

उड़द की ये किस्म 70 दिनों में पक जाती है। उड़द की इस किस्म का बीज मध्यम छोटा चमकीला काला और तने पर ही फलियाँ पास–पास गुच्छो मे लगती है। इस किस्म की औसत पैदावार 10–11क्विंटलध्हे है।

### 6. जवाहर उड़द–3

उड़द की ये किस्म 70 दिनों में पक जाती है। उड़द की इस किस्म का बीज मध्यम छोटा हल्का काला और मध्यम कम फैलने वाला होता है। इस किस्म की औसत पैदावार 4–4.80 क्विंटल/हे है।

# Isabion

## Amino Acids

**Growth Regulator**

## उन्नति के साथ, विश्वास के साथ

syngenta

Flowers

Fruits

Roots

# मूँग की फसल के घातक रोगों के लक्षण और उनकी रोकथाम

मूँग की खेती गर्मी के मौसम में भारत में बड़े पैमाने पर की जाती है। किसानों को इस फसल में कई रोगों का सामना करना पड़ता है जिससे की फसल की उपज में बहुत कमी आती है। मूंग की फसल में कई ऐसे रोग लगते है जिनसे फसल का उत्पादन आधे से भी कम हो जाता है। अगर किसान समय से इन रोगों की रोकथाम कर लेते है तो इस नुकसान को काफी हद तक खत्म किया जा सकता है। इस लेख में हम आपको मूंग की फसल की प्रमुख बीमारियों के लक्षण और उनकी रोकथाम के बारे में जानकारी देंगे।

## मूँग की फसल के मुख्य रोग

मूँग की फसल वैसे तो कई रोगों से संक्रमित होती है। यहाँ हम आपको कई ऐसी बीमारियों के बारे में जानकारी देंगे जिससे की आप उन रोगों को समय से पाचन कर उनकी रोकथाम कर सकते है। मूँग की फसल में कई रोग लगते है जैसे की – एन्थ्राक्नोज रोग, पाउडरी फफूंदी रोग, पत्ती धब्बा रोग, रस्ट रोग, पीला चितकबरी रोग, सुखी जड़ सड़न रोग इनमे से सबसे खतनाक रोग है।

## एन्थ्राक्नोज रोग (anthracnose)

ये रोग मूँग की फसल के हर हिस्से को संक्रमित करता है और पौधे की वृद्धि में दिखाई देता है। परिपत्र, पत्तियों और फलियों पर गहरे मध्य भाग और चमकीले लाल नारंगी किनारों वाले काले, धँसे हुए धब्बे। संक्रमण गंभीर होने पर प्रभावित भाग सूख जाते हैं। संक्रमण के कारण बीज बोने के तुरंत बाद अंकुर झुलस जाते हैं या बीजों का अंकुरण नहीं होता है। गंभीर संक्रमण पूरी पत्ती में फैलता है और झुलसा जाता है।

## एन्थ्राक्नोज रोग की रोकथाम के उपाय

- बुवाई के लिए सुरक्षित और प्रमाणित मूँग बीज का चयन करें।
- बीजों को बीमारी से बचाने के लिए बुवाई से पहले 10 मिनट के लिए 54 डिग्री सेल्सियस पर गर्म पानी का उपचार करें।
- अगर हर साल खेत में बीमारी आती है, तो फसल चक्र का पालन करें।
- 2 ग्राम कार्बेन्डाजिम प्रति कि.ग्रा. बीजों को उपचारित करें।
- बुबाई के 40 और 55 दिन पश्चात फफूद नाशक दवा छिड़कें, जैसे मेन्कोजेब 75 डब्लूपी 2.5 ग्रामध्ली. या कार्बेन्डाजिम 50 डब्लूपी 1 ग्रामध्ली।

## पाउडरी फफूंदी रोग (Powdery mildew)

ये मूँग की फसल में लगने वाले घातक रोगों में से एक है। मूँग की फलियों में पाउडरी फफूंदी बीमारी का प्रकोप गंभीर रूप से देखा जा सकता है। पत्तियों और अन्य हरे भागों पर सफेद पाउडर जैसे धब्बे दिखाई देते हैं, जो बाद में फीके हो जाते हैं। ये धब्बे आकार में धीरे–धीरे बढ़ते हैं और निचली सतह पर गोलाकार बन जाते हैं। जब संक्रमण गंभीर होता है, तो पत्तियों की दोनों सतहें सफेद हो जाती हैं। गंभीर रूप से प्रभावित क्षेत्र सिकुड़कर टूट जाते हैं। गंभीर संक्रमण में पत्तियां पीली हो जाती हैं, इसलिए पत्तियां जल्दी गिर जाती हैं। यह रोग भी जबरन परिपक्वता पैदा करता है।

## पाउडरी फफूंदी रोग की रोकथाम के उपाय

- इस रोग से प्रभावित मूँग के खेत में 10 दिनों के अंतराल पर एनएसकेई / 5% या नीम तेल / 3% का दो बार छिड़काव करें।
- फसल को रोगों से बचाने के लिए केवल रोग प्रतिरोधी प्रजातियों का प्रयोग करें।
- अगर खेत में रोग का प्रकोप दिखाई देता है तो कार्बेन्डा. जिम 200 ग्राम या वेटटेबल सल्फर 600 ग्राम या ट्राइडेमोर्फ 200 उस का छिड़काव प्रति एकड़ की दर से करें।
- इस छिड़काव को 15 दिन बाद फिर से दोहराएँ।

### पीला चितकबरी रोग (Yellow mosaic disease)

इस रोग की शुरुआत में नई पत्तियों की हरी परत पर छोटे पीले धब्बे दिखाई देते हैं। यह जल्द ही सुनहरे पीले या चमकीले पीले मोजेक के रूप में विकसित होता है। पत्तियों में पीला मलिनकिरण धीरे–धीरे बढ़ता है और अंततः पूरी तरह पीला हो जाता है। संक्रमित पौधे कम उपज देते हैं क्योंकि वे देर से परिपक्व होते हैं और कुछ फूल और फलियाँ धारण करते हैं। फलियाँ विकृत और छोटी होती हैं। बीज बनने से पहले पौधा मर जाता है।

### पीला चितकबरी रोग की रोकथाम के उपाय

- रोग प्रतिरोधी या सहनशील किस्मों का चयन करें, जैसे Pant Moong&3, Pusa Vishal, Basanti, ML&5, ML337, PDM&54, King TJM&3, K&851, Pant Moong&2, Pusa Vishal, HUM&1 और Basanti
- प्रमाणित बीजो का उपयोग करें।
- जुलाई के पहले सप्ताह तक बीज की बुवाई कतारों में करें, रोगग्रस्त पौधों को उखाडकर नष्ट करें।
- मिश्रित फसल के लिए दो पंक्तियाँ (60 x 30 सेमी) या ज्वार (45 x 15 सेमी) उगाएँ।
- बीजों को थायोमेथोक्सम–70WS या इमिडाक्लोप्रिड–70WS से 4 ग्राम प्रति किग्रा की दर से उपचारित करें।
- रोग का वाहक सफेद मक्खी कीट है, जिसे नियंत्रित करने के लिए ट्रायजोफॉ 40 ईसी, 2 मि.ली. प्रति लीटर या थायोमे. थोक्साम 25 मि.ली. प्रति लीटर का उपयोग किया जाता है।

### पर्ण व्यांकुचन रोग या लीफ क्रिंकल

पर्ण व्यांकुचन रोग, जिसे लीफ क्रिंकल भी कहते हैं, एक महत्वपूर्ण विषाणु जनित रोग है। बीज पर्ण व्यांकुचन रोग को फैलाता है, और कुछ जगहों पर सफेद मक्खी भी इसे फैलाती हैं। इसके लक्षण आम तौर पर फसल बोने के तीन से चार सप्ताह में दिखाई देते हैं। इस रोग में दूसरी पत्ती बढ़ने लगती है, झुर्रियां आने लगती हैं और पत्तियों में मरोड़पन आने लगता है। खेत में संक्रमित पौधों को दूर से देखकर ही पहचाना जा सकता है। इस रोग के कारण पौधे का विकास रुक जाता है, जिससे सिर्फ नाम की फलियां निकलती हैं। यह बीमारी पौधे की किसी भी अवस्था में फैल सकती है।

### पर्ण व्यांकुचन रोग की रोकथाम के उपाय

- रोग बीजों से फैलते हैं, इसलिए बीमार पौधों को उखाड़ कर जला कर नष्ट करना चाहिए।
- फसल को पर्ण व्यांकुचन रोग (लीफ क्रिंकल) से बचाने के लिए इमिडाक्रोपिरिड को बुवाई के 15 दिन बाद या रोग के लक्षण दिखने पर छिड़काव करें।

# सोयाबीन की फसल को प्रभावित करने वाले रोग व उनकी रोकथाम

सोयाबीन की बुवाई जून के प्रथम सप्ताह से शुरू हो जाती है। ऐसे में सोयाबीन की बंपर पैदावार लेने के लिए किसानों को इसकी उन्नत किस्में और बुवाई के सही तरीके की जानकारी होना बेहद जरूरी है। सोयाबीन के किसानों को अच्छे भाव मिलते हैं। क्योंकि सोयाबीन से तेल निकाला जाता है। इसके अलावा सोयाबीन से सोया बड़ी, सोया दूध, सोया पनीर आदि चीजें बनाई जाती है।

बतादें, कि सोयाबीन तिलहनी फसलों में आता है और इसकी खेती देश के कई राज्यों में होती है। विशेषकर मध्यप्रदेश में इसकी खेती प्रमुखता से की जाती है। सोयाबीन का भारत में 12 मिलियन टन उत्पादन होता है। यह भारत में खरीफ की फसल है। भारत में सबसे ज्यादा सोयाबीन मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान में उत्पादित होती है। मध्य प्रदेश का सोयाबीन उत्पादन में 45 प्रतिशत जबकि महाराष्ट्र का 40 प्रतिशत हिस्सा है। इसके अलावा बिहार में किसान इसकी खेती कर रहे है। मध्यप्रदेश के इंदौर में सोयाबीन रिसर्च सेंटर है।

### बैक्टेरियल ब्लाइट / Bacterial blight

इस रोग के कारण बीजों पर उभरे हुए या धंसे हुए घाव विकसित हो सकते हैं और वे सिकुड़े हुए और बदरंग हो सकते हैं। रोग के कारण पत्तियों पर छोटे, कोणीय, पारभासी, पानी से लथपथ, पीले से हल्के भूरे रंग के धब्बे दिखाई देते हैं।

नई पत्तियाँ सबसे अधिक संक्रमित होती हैं और नष्ट हो जाती हैं। कोणीय घाव बड़े होते हैं और विलीन होकर बड़े, अनियमित मृत क्षेत्र बनाते हैं। अधिक संक्रमण के कारण निचली पत्तियों का जल्दी झड़ाव हो सकता है और तनों और डंठलों पर बड़े, काले घाव विकसित हो जाते हैं।

### रोग नियंत्रण के उपाय

- रोग को नियंत्रण करने के लिए गर्मी में खेत की गहरी जुताई करें।
- बुवाई के लिए स्वस्थ/प्रमाणित बीजों का प्रयोग करें।
- संक्रमित फसल अवशेषों को नष्ट कर दें।
- खड़ी फसल में रोग के नियंत्रण के लिए 250 पीपीएम (2.5 ग्राम/10 किग्रा बीज) की दर से स्ट्रेप्टोसाइक्लिन से बीज उपचार करें।
- इसके आलावा 250 पीपीएम (2.5 ग्राम/10 लीटर पानी) की दर से स्ट्रेप्टोसाइक्लिन के साथ 2 ग्राम/लीटर की दर से किसी भी तांबे के कवकनाशी का उपयोग करें।

### सर्कोस्पोरा लीफ ब्लाइट / Cercospora leaf blight

संक्रमित पत्तियां चमड़े जैसी, गहरे, लाल बैंगनी रंग की दिखाई देती हैं। गंभीर संक्रमण से पत्ती के ऊतकों में तेजी से क्लोरोसिस और परिगलन होता है, जिसके परिणामस्वरूप पत्तियां गिर जाती हैं। डंठलों और तनों पर घाव थोड़े धंसे हुए, लाल बैंगनी रंग के होते हैं।

### रोग नियंत्रण के उपाय

- बुवाई के लिए स्वस्थ/प्रमाणित बीजों का प्रयोग करें।
- बीज उपचार थिरम . कार्बेन्डाजियम (2:1)/ 3 ग्रामधकिग्रा बीज से करें।
- मैंकोजेब या कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 2.5 ग्राम/लीटर या कार्बेन्डाजिम 1 ग्राम/लीटर का उपयोग करें।

### ड्राई रूट रोट / Dry root rot

यह रोग तब होता है जब पौधे नमी के तनाव में होते हैं या नेमाटोड के हमले के कारण या मिट्टी के संघनन के कारण या पोषक तत्वों की कमी के कारण होते हैं। यह सोयाबीन के पौधे का सबसे आम बेसल तना और जड़ रोग है। निचली पत्तियाँ हरितहीन हो जाती हैं और मुरझाकर सूखने लगती हैं। रोगग्रस्त ऊतकों का रंग आमतौर पर भूरा हो जाता है। स्क्लेरोटिया काले पाउडर जैसे दिखते हैं इसलिए इस बीमारी को चारकोल रोट के नाम से जाना जाता है।

जड़ों का काला पड़ना और टूटना सबसे आम लक्षण है। कवक शुष्क परिस्थितियों में मिट्टी और फसल के मलबे में जीवित रहता है। शुष्क परिस्थितियाँ, अपेक्षाकृत कम मिट्टी की नमी और पोषक तत्व और 25° C से 35° C तक का तापमान इस रोग के लिए अनुकूल है।

### रोग नियंत्रण के उपाय

- रोग को नियंत्रण में रखने के लिए ग्रीष्म ऋतु में गहरी जुताई करें।
- फसल का संतुलित उर्वरकीकरण सुनिश्चित करें।
- खेत को अच्छी तरह से सूखा रखें।
- पिछले वर्ष की संक्रमित पराली को नष्ट कर दें।
- टी. विराइड 4 ग्रामधकिग्रा या पी. फ्लोरोसेंस 10 ग्राम/किलो बीज या कार्बेन्डाजिम या थीरम 2 ग्राम/किलो बीज से बीजोपचार करें।
- कार्बेन्डाजिम 1 ग्राम/लीटर या पी. फ्लोरेसेंसध्टी. विराइड 2.5 किग्रा/हेक्टेयर के साथ 50 किग्रा एफवाईएम के साथ स्पॉट ड्रेंचिंग करें।

### अल्टरनेरिया लीफ स्पॉट / Alternaria leaf spot

इस रोग से संक्रमित पौधों की फलियों में बीज छोटे एवं सिकुड़े हो जाते हैं और बीज पर गहरे, अनियमित, फैले हुए धँसे हुए क्षेत्र बन जाते हैं। पत्तों पर संकेंद्रित छल्लों के साथ भूरे, परिगलित धब्बों का दिखना, जो आपस में जुड़कर बड़े परिगलित क्षेत्रों का निर्माण करते हैं। मौसम के अंत में संक्रमित पत्तियाँ सूख जाती हैं और समय से पहले गिर जाती हैं।

### रोग नियंत्रण के उपाय

- बुवाई के लिए स्वस्थ/प्रमाणित बीजों का प्रयोग करें।
- कटाई के बाद खेतों से फसल अवशेषों को नष्ट करें।
- रोग नियंत्रण के लिए बीज उपचार थिरम . कार्बेन्डा. जियम (2:1)/3 ग्राम/किग्रा बीज से करें।
- कड़ी फसल में रोग नियंत्रण के लिए मैंकोजेब या कॉपर कवकनाशी 2.5 ग्राम/लीटर या कार्बेन्डाजिम 1 ग्राम/ली. टर का उपयोग करें।

SONALIKA
HEAVY DUTY TRACTOR RANGE

# BEST TRACTOR

## Between 31-40 HP

SONALIKA
SIKANDER DI 35

जीत उसी की होती है
जिसका दिलों पर राज हो!

Thank You Farmers!

# टमाटर की फसल में लगने वाले प्रमुख रोगों का नियंत्रण कैसे करे, जाने यहां

टमाटर की फसल विशेष रूप से भारतीय खाद्य संस्कृति में महत्वपूर्ण है और यह एक प्रमुख सब्जी है जो विभिन्न प्रकार के व्यंजनों में उपयोग किया जाता है जैसे की सलाद, सूप, सॉस, और सब्जियों में। टमाटर का वास्तविक अनुभव तथा उत्पादन भारी खेती में या छोटे स्तर पर भी किया जा सकता है। यह फल प्रायरू लाल, पीला, और हरे रंग का होता है। टमाटर की खेती में किसानो को कई कठनाईयो का भी सामना करना पड़ता है, इनमे सबसे प्रमुख है टमाटर की फसल में लगने वाले रोग। टमाटर की फसल में लगने वाले रोग फसल उत्पादन को बहुत प्रभावित करते है जिससे की उपज में काफी हद तक कमी आ जाती है। आज के इस लेख में हम आपको इसकी फसल में लगने वाले प्रमुख रोगों के बारे में जानकारी देंगे जिससे की आप समय से रोगों की पहचान करके उनका नियंत्रण कर सकते है।

## टमाटर से कौन–कौन से रोग होते हैं?

टमाटर की फसल कई रोगों से प्रभावित होती है। टमाटर के सफल उत्पादन के लिए जरुरी है कि उसमे लगने वाले रोगों के बारे में सटीक जानका. री हो ताकि उनका सही तरिके से उपचार करके टमाटर का उत्पादन बढ़ाया जा सके। नीचे आप इस फसल में लगने वाले प्रमुख रोगों और उनके उपचार के बारे में जानेंगे।

## आर्द्रगलन या कमरतोड़ रोग (Damping off)

इस रोग का प्रमुख कारक पाइथियम एफैनिडर्मेटम नामक जीवाणु है। कमरतोड़ रोग (कंउचपदह वाि) रोग के लक्षण दो चरणों में होता है। पहले के चरण मे ये रोग नर्सरी में ही शुरू हो जाता है इस चरण में बीज अंकुर भूमि की सतह से ऊपर आने से पहले ही मर जाते है। जिससे की नर्सरी में पौधों की बहुत कमी आती है। रोग से प्रभावित युवा रेडिकल और प्लम्यूल मर जाते हैं और पूरी तरह से सड़ जाते हैं। पौधे बनने के बाद का चरण – दूसरे चरण में संक्रमण पौधों के तनो पर होता है। जमीनी स्तर पर संक्रमित ऊतक मुलायम हो जाते हैं और पानी से लथपथ हो जाते हैं। तने का विगलन  होने से पौधा भूमि की सतह पर लुढ़ककर गिर कर मर जाता है। आरंभ में रोग के लक्षण  कुछ जगहों पर दिखाई पड़ते है तथा 2–3 दिन में ये रोग सारे पौधों या नर्सरी में फैल जाता है।

## आर्द्रगलन या कमरतोड़ रोग की रोकथाम के उपाय

पौधशाला में रोग के को नियंत्रित करने के लिए फोर्मलिन से बुवाई के 15 से 20 दिनों पहले उपचारित करे, तब तक पॉलीथिन की चाद. रों से ढककर रखें। जब मिट्टी से इस दवा की गंद निकलनी बंद हो जाए तो उसके बाद बीज बोएं। इस रोग से बचाव के लिए नर्सरी बेब के लिए ऊंची बेड विधि का इस्तेमाल करे। बेहतर जल निकासी के लिए हल्की, लेकिन बार–बार सिंचाई करें। कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 0.2% या बोर्डो मिश्रण 1% के साथ फफूंद कल्चर से बीजोपचार करें, इसके आलावा ट्राइकोडर्मा विराइड (4 ग्रामधकिलो बीज) या थिरम (3 ग्रामधकिलो बीज) इसका एकमात्र निवारक उपाय है। बादल छाए रहने पर 0.2% मेटालैक्सिल का छिड़काव करें।

## फ्यूजेरियम विल्ट (Fusarium Wilt)

रोग का पहला लक्षण शिराओं का साफ होना और पत्तियों का हरित. हीन होना है। नई पत्तियाँ एक के बाद एक मर सकती हैं और कुछ ही दिनों में पूरी पत्तियाँ मुरझाकर नष्ट हो सकती हैं। रोग के संक्रमण से डंठल और पत्तियाँ झड़ जाती हैं और मुरझा जाती हैं। युवा पौधों में, लक्षण का समाशोधन होता है। शिराओं का टूटना और डंठलों का गिरना इसका मुख्य लक्षण माना जाता है।

फ्यूजेरियम विल्ट (Fusarium Wilt) रोग की रोकथाम के उपाय प्रभावित पौधों को हटाकर नष्ट कर देना चाहिए। रोग को नियंत्रित करने के लिए कार्बेन्डाजिम (0.1%) से स्पॉट ड्रेंच करें। रोग को खतम करने के लिए अनाज जैसी गैर–मेजबान फसल के साथ फसल चक्र अपनाए।

## पछेती झुलसा रोग

पछेती झुलसा रोग फाइरोफ्थोरा इनफेस्टेन्स नामक कवक से होता है। गर्म, गीले मौसम में टमाटर की पत्तियों और फलों के माध्यम से तेजी से फैलती है, जिससे पतन और क्षय होता है। ब्लाइट का प्रारंभिक लक्षण पत्तियों का तेजी से फैलना, पानी जैसा सड़ना है, जो जल्द ही गिर जाते हैं, सिकुड़ जाते हैं और भूरे हो जाते हैं। उपयुक्त परिस्थितियों के दौरान, जब रोगजनक पत्ती के ऊतकों के माध्यम से सक्रिय रूप से फैल रहा होता है, तो घावों के किनारे हल्के हरे रंग के दिखाई दे सकते हैं, और पत्तियों के नीचे की तरफ एक महीन सफेद श्कवकश की वृद्धि देखी जा सकती है।

## पछेती झुलसा रोग की रोकथाम के उपाय

फसल को पिछेती झुलसा रोग से बचाने के लिए स्वस्थ रोगमुक्त पौधों का उपयोग करना चाहिए। खेत से रोगग्रस्त पौधों को बाहर निकालकर नष्ट कर दें। साथ ही प्रभावित फसल पर 25 ग्राम प्रति लीटर की दर से 4 प्रतिशत मेटालेक्सिल और 64 प्रतिशत मैंकाजेव छिडकाव करें।

## अगेती झुलसा रोग

अल्टरनेरिया सोलेनाई नामक कवक टमाटर की फसल में यह रोग पैदा करता है। प्रभावित पौधों की पत्तियों पर छोटे काले धब्बे हैं, जो बड़े होकर गोल छल्लेनुमा धब्बों में बदल जाते हैं। फल पर गहरे और शुष्क धब्बे होते हैं। इन धब्बों के बढ़ने से पत्तियां गिर जाती हैं। रोग पौधे के हर हिस्से में फैल सकता है।

## अगेती झुलसा रोग की रोकथाम के उपाय

रोग से प्रभावित पौधों को जलाकर नष्ट करना चाहिए ताकि यह रोग अन्य पौधों में ना फैल पाए। टमाटर के बीजों को बोने से पहले 75 WP प्रति ाह बीजोपचार करना चाहिए। यदि फसल में रोग के लक्षण दिखाई दें तो मैंकोजेब 75 WP 2.5 kg प्रति हेक्टर की दर से 10 दिन के अंतराल पर छिडकाव करना चाहिए। फसल चक्र को अपनाकर भी इस रोग को नियंत्रित किया जा सकता है।

## लीफ कर्ल रोग

लीफ कर्ल रोग की विशेषता पौधों का गंभीर विकास रुक जाना और नीचे की ओर लुढ़क जाना है। इस रोग के लक्षण पत्तों का सिकुड़ना नई उभरती पत्तियाँ बाद में हल्के पीले रंग की दिखाई देना हैं, व कर्लिंग लक्षण भी दिखाते हैं। पुरानी पत्तियाँ चमड़े जैसी और भंगुर हो जाती हैं। नोड्स और इंटरनोड्स का आकार काफी कम हो जाता है। संक्रमित पौधे पीले दिखते हैं और बढ़वार कम देते हैं। पार्श्व शाखाएँ झाड़ीदार रूप देती हैं। इस रोग से प्रभावित संक्रमित पौधे बौने रह जाते हैं।

## लीफ कर्ल रोग का रोकथाम

ये रोग सफेद मक्खी के द्वारा फैलाया जाता है इसलिए सफेद मक्खी की निगरानी के लिए 12/gsD टेयर की दर से पीला चिपचिपा जाल रखें। अवरोधक फसलें–अनाज उगाएं, खेत के चारों ओर खरपतवार मेजबान को हटाना नेट हाउस या ग्रीन हाउस में संरक्षित नर्सरी में सफेद मक्खी के नियंत्रण के लिए रोपाई के 15, 25, 45 दिन बाद इमिडाक्लोप्रिड 0.05% या डाइमेथोएट 0.05% का छिड़काव करे।

IFFCO
पूर्णतः सहकारी स्वामित्व
Wholly owned by Cooperatives

# इफको नैनो यूरिया (तरल)

## के साथ आया

# इफको नैनो डीएपी (तरल)

बेहतर फसल और अधिक लाभ पाना हुआ अब और भी सरल

# आम की फसल में लगने वाले प्रमुख रोग और उनके नियंत्रण के उपाय

आम की फसल को कई प्रकार के रोग प्रभावित कर सकते हैं। ये रोग फसल की सेहत को कमजोर कर सकते हैं और पूरी पौधशाला को प्रभावित कर सकते हैं। आम के रोगों के कारण फसल की उपज पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। इस लेख में हम आज आपको आम की फसल में लगने वाले प्रमुख रोगों और उनके नियंत्रण के बारे में जानकारी देंगे, जिससे की आप समय से उन रोगों की पहचान करके उनका नियंत्रण कर सकते है।

## कालावूण रोग (Anthracnose)

यह रोग नई पत्तियों, तने, पुष्पक्रम और फलों पर दिखाई देता है। पत्तियों पर अंडाकार अनियमित, भूरे–भूरे रंग के धब्बे जो मिलकर पत्ती के बड़े क्षेत्र को ढक सकते हैं । प्रभावित पत्ती के ऊतक सूखकर टुकड़े–टुकड़े हो जाते हैं। संक्रमित डंठलों पर पत्तियाँ झड़कर गिर जाती हैं। नये तने पर भूरे भूरे धब्बे विकसित हो जाते हैं। धब्बे बड़े हो जाते हैं और प्रभावित क्षेत्र के घेरने और सूखने का कारण बनते हैं। रोग नई पत्तियों, तने, पुष्पक्रम और फलों पर दिखाई देता है। अक्सर, टहनियों पर शीर्ष से नीचे की ओर काले परिगलित क्षेत्र विकसित हो जाते हैं, जिसके कारण फल खराब होकर गिर जाते है।

आर्द्र मौसम में, पुष्प अंगों पर छोटे–छोटे काले बिंदु विकसित हो जाते हैं। संक्रमित फूल के हिस्से अंततः झड़ जाते हैं जिसके परिणामस्वरूप आंशिक या पूर्ण रूप से फूल नष्ट हो जाते हैं। पकने वाले फलों में विशिष्ट एन्थ्रेक्नोज दिखाई देता है। काले धब्बे दिखा. ई देना, प्रभावित फलों की त्वचा धीरे–धीरे धँस जाती है और चिपक जाती है।

## कालावूण रोग नियंत्रण के उपाय

- 0.2 प्रतिशत जिनैब मिश्रण का छिड़काव करें। जिन क्षेत्रों की सम्भावना अधिक हो वहां सुरक्षा के तौर पर कलियाँ विकसित होने से पहले ही उपरोक्त घोल का छिड़काव करें।
- फूलों की शाखाओं पर अक्टूबर से शुरू करके 3 सप्ताह के अंतराल पर पी. फ्लोरेसेंस (एफपी 7) 5 ग्राम प्रति की दर से छिड़काव करें।
- फूलों और गुच्छों पर 5–7 छिड़काव एक बार करें। फलों को भंडारण से पहले, 15 मिनट के लिए गर्म पानी (50–55°C) से उपचारित करें
- 5 मिनट के लिए बेनोमिल घोल (500 पीपीएम) या थायोबेंडा. जोल (1000 पीपीएम) में डुबोएं।

## सफेद चूर्णी रोग (Powdery mildew)

खस्ता फफूंदी आम की सबसे गंभीर बीमारियों में से एक है जो लगभग सभी किस्मों को प्रभावित करती है। रोग का विशिष्ट लक्षण सफेद सतही पाउडरयुक्त फफूंद का बढ़ना है। ये पाउडर पौधे के कई भोगों को ढक लेता है, पत्तियाँ, पुष्पगुच्छों के डंठल, फूल और युवा फल सभी इस रोग से प्रभावित होते है। प्रभावित फूल और फल समय से पहले गिर जाते हैं जिससे फसल का भार काफी कम हो जाता है या फल लगने में भी रुकावट आ सकती है। बारिश या धुंध फूल आने के दौरान ठंडी रातें रोग फैलने के लिए अनुकूल होती हैं।

## सफेद चूर्णी रोग नियंत्रण के उपाय

इस रोग की रोकथाम के लिए पौधों पर 0.5 किग्राध्वृक्ष की दर से बारीक सल्फर (250–300 मेश) छिड़कें। पहला फूल आने के तुरंत बाद, दूसरा 15 दिन बाद वेटटेबल सल्फर (0.2%) का छिड़काव करें। इसके आलावा कार्बेन्डाजिम (0.1%) या ट्राइडेमोर्फ (0.1%), या कैराथेन (0.1%) आदि का भी छिड़काव कारगर माना गया है। जिन क्षेत्रों में बौर आने के समय मौसम असामान्य रहा हो वहां हर हालत में सुरक्षात्मक उपाय के आधार पर 0.2 प्रतिशत वाले गंधक के घोल का छिड़काव करें और जरुरत के अनुसार उसे दुहराएँ।

## गुम्मा रोग (Malformation)

ये आप की फसल का भयानक रोग है जिससे कारण उपज में काफी हद तक कमी आती है। आम की फसल का ये रोग फ्यूजेरियम मोलिलिफोर्मे सबग्लोटिनेंस नामक फफूंद के कारण होता है। इस रोग के लक्षण तीन प्रकार के होते है– गुच्छेदार शीर्ष चरण, पुष्प विकृति और वनस्पति आदि। नर्सरी में गुच्छेदार शीर्ष चरण में गाढ़े छोटे अंकुरों का गुच्छा, अक्सर छोटी–छोटी प्रारंभिक पत्तियाँ। शूट छोटे रहते हैं और एक गुच्छेदार शीर्ष उपस्थिति देते हुए बौना रह जाते है। वानस्पतिक विकृति, आम की टहनी पर एक पट्टी के स्थान पर अनगिनत छोटी–छोटी पत्तियों का गुच्छा बन जाना, तने की गांठों के बीच अंतराल अत्यधिक कम हो जाना, पत्तियों का कड़ा हो जाना, बाद में यह गुच्छा नीचे की और झुक जाता है और टॉप जैसा दिखता है। पुष्पक्रम की विकृति, पुष्पगुच्छ में भिन्नता दर्शाती है। विकृत सिर सूखकर काले हो जाते है, द्रव्यमान और लंबे समय तक बना रहता है। द्वितीयक शाखाएं छोटी–छोटी पत्तियों में परिवर्तित हो जाती हैं और चुड़ैलों की झाड़ू जैसी दिखाई देती है।

## गुम्मा रोग नियंत्रण के उपाय

- रोगग्रस्त पौधों को नष्ट कर देना चाहिए। रोगमुक्त रोपण सामग्री का उपयोग करें।
- आम के पौधे गुम्मा रोग से बचाने के लिए रोगग्रस्त पुष्पों की मंजरियों को 30–40 से.मी. नीचे से कटाई कर दें और धरती में खोद कर दबा दें।
- चार मि.ली. प्लानोफिक्स प्रति नौ लीटर पानी में घोलकर फरवरी–मार्च के महीने में छिड़काव करें।
- उपचार के लिए प्रारम्भिक अवस्था में जनवरी–फरवरी माह में बौर को तोड़ दें और अधिक प्रकोप होने पर 200 पीपीएम वृध्दि (दं) होरमोन की 900 मिली प्रति 200 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव कर दें, और कलियाँ आने की अवस्था में जनवरी के महीने में पेड़ के बौर तोड़ देना भी लाभदायक रहता है, क्योंकि इससे न केवल आम की उपज बढ़ जाती है। बल्कि इस बीमारी के आगे फैलने की सम्भावना भी कम हो जाती है।

## स्टेम एंड रॉट (Stem end rot)

इस रोग से प्रभावित पौधों पर पेडिकेल के आधार के चारों ओर गहरा एपिकार्प बन जाता है। प्रारंभिक चरण में प्रभावित क्षेत्र बड़ा होकर एक गोला. कार, काला धब्बा बन जाता है। ये रोग आर्द्र वातावरण में तेजी से फैलता है। इस रोग से प्रभावित पौधे का पूरा फल दो या तीन दिन में पूरी तरह काला हो जाता है। गूदा भूरा और कुछ हद तक भूरा काला हो जाता है, बारिश से फैली पेड़ों की मृत टहनियाँ और छाल इस रोग को फैलती है।

## स्टेम एंड रॉट (Stem end rot) रोग नियंत्रण के उपाय

संक्रमित टहनियों को काटकर नष्ट कर दें और कार्बेन्डाजिम या थायोफैनेट मिथाइल (0.1%) या क्लोराथालोनिल का छिड़काव करें।

# Cardamom Farming: इलायची की खेती कैसे होती है?

इलायची, जिसे आम तौर पर मसालों की रानी कहा जाता है, दक्षिण भारत में पश्चिमी घाटों पर बड़े–बड़े बरसाती जंगलों का मूल निवासी है। भारत में इसकी खेती लगभग 1,00,000 हेक्टेयर में होती है। मुख्य रूप से अधिकांश दक्षिणी राज्यों जैसे तमिलनाडु, कर्नाटक और केरल में कुल क्षेत्रफल का 60.31 प्रतिशत और 9% हिस्सा है। भारत का वार्षिक उत्पादन लगभग 40 हजार मीट्रिक टन है, जिसका लगभग 60 प्रतिशत से अधिक विदेशो में निर्यात किया जाता है, जिससे लगभग 40 मिलियन रुपये की विदेशी मुद्रा मिलती है। इलायची भोजन, कन्फेक्शनरी, पेय पदार्थ और शराब जैसी कई तैयारियों को स्वादिष्ट बनाती है। आज के इस लेख में हम इसकी खेती के बारे में सम्पूर्ण जानकारी देंगे।

## इलायची की खेती के लिए मिट्टी और जलवायु की आवश्यकता

इलायची की खेती के लिए दोमट मिट्टी वाले घने और छायादार स्थान काफी उपयुक्त हैं। 600 से 1500 मीटर की ऊंचाई पर इसकी फसल की खेती आसनी

इसके खेत में पर्याप्त जल निकासी व्यवस्था होनी चाहिए। यह प्राकृतिक रूप से अम्लीय, 5.0 से 6.5 पीएच सीमा वाली दोमट मिट्टी में उगाया जाता है। जून से दिसंबर महीने तक का मौसम इसके उत्पादन के लिए बहुत अच्छा माना जाता है।

## इलायची की उन्नत किस्में

इलायची की अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए उन्नत किस्मों का अहम् योगदान है। इलायची दो प्रकार की होती है – हरी इलायची और भूरी इलायची। भारतीय व्यंजनों में भूरी इलायची का उपयोग बहुत किया जाता है। इसका उपयोग मसालेदार खाने को और अधिक स्वादिष्ट बनाने और इसका स्वाद बढ़ाने के लिए किया जाता है। इलायची उन्नत किस्में निम्नलिखित है – मालाबार, मुदिगरी 1, मुदिगरी 2, PV 1, PV–3, ICRI 1, ICRI 3, TKD 4, IISR सुवर्ण, IISR विजेता, IISR अविनाश, TDK – 11, CCS–1, सुवासिनी, अविनाश, विजेता – 1, अप्प. ानगला 2, जलनि (ळतममद हवसक) आदि।

## इलायची की बुवाई का तरीका?

इलायची की बुवाई पुराने पौधों के सकर्स या बीजों का उपयोग करके किया जाता है। इलायची की बुवाई करने के लिए स्वस्थ और अधिक उपज देने वाले पौधों से बीज एकत्र करें। बीज दर – 600 ग्राम/हेक्टेयर (ताजा बीज) बीज रखे। इलायची के पौधे तैयार करने के लिए पहले नर्सरी तैयार करनी पड़ती है, अच्छी तरह से सड़ी हुई गोबर की खाद, लकड़ी की राख और जंगल की मिट्टी को बराबर मात्रा में मिलाकर क्यारियां तैयार करें। बीजों/सकर्स को क्यारियों में बोयें और महीन बालू की पतली परत से ढक दें।

## इलायची की पौध उगाना का तरीका

बीज क्यारियों को मल्चिंग और छायां प्रदान करनी जरुरी होती है। क्यारियों को नम रखना चाहिए लेकिन क्यारियों बहुत गीला नहीं होना चाहिए। अंकुरण आमतौर पर बुवाई के एक महीने बाद शुरू होता है और तीन महीने तक जारी रहता है। पौध को द्वितीय नर्सरी में 3 से 4 पत्ती अवस्था में रोपित किया जाता है।

## दूसरी नर्सरी का निर्माण

दूसरी नर्सरी का निर्माण करते समय ये ध्यान रखे की जिस जगह आप नर्सरी का निर्माण कर रहे है उस जगह क्यारियों के ऊपर छाया होनी जरुरी है। पौधों की रोपाई 20 • 20 से.मी. की दूरी पर करें। 20 • 20 से.मी. आकार के पॉलीबैग का उपयोग किया जा सकता है।

## इलायची को कैसे बोया जाता है?

इलायची की पौध की रोपाई के लिए 60 सें.मी. x 60 सें.मी. x 60 सें.मी. आकार के गड्ढे खोदकर खाद और ऊपरी मिट्टी से भर दें। ढालू क्षेत्रों में कंटूर प्लांटिंग की जा सकती है। ये विधि 18–22 महीने पुराने पौधों की रोपाई के लिए उपयोग किया जाता है। मुख्य रूप से इलायची की खेती मानसून के मौसम में की जाती है। फसल की वर्षा से ही जल आपूर्ति हो जाती है। अगर गर्मी और वर्षा के बीच का समय लम्बा हो जाता है तो अच्छी ऊपज पाने के लिए स्प्रिंकल के माध्यम से सिंचाई अवश्य करें।

## अच्छी उपज पाने के लिए उर्वरक और खाद प्रबंधन

फसल में रोपाई से पहले 10 टन प्रति एकड़ गोबर की खाद या कम्पोस्ट का इस्तेमाल करें। उर्वरक की बात करें तो अधिक ऊपज प्राप्त करने के लिए फसल में 30 – 35 किलोग्राम नाइट्रोजन, 30 – 35 किलोग्राम फॉस्फोरस और 60 – 65 किलोग्राम पोटाश प्रति एकड़ की दर से खेत में डालें। उर्वरकों को दो बार बराबर मात्रा में फसल में डालें। एक उर्वरकों के भाग को जून या जुलाई में खेत में डालें उर्वरक ड़ालते समय ये अवश्य ध्यान रखें की खेत में प्रचुर मात्रा में नमी हो। दूसरा उर्वरक का भाग अक्टूबर या नवंबर के महीने में डालें।

## इलायची का पेड़ कितने साल में फल देता है?

इलायची के पौधे आमतौर पर रोपण के दो साल बाद फल देने लगते हैं। अधिकांश क्षेत्रों में कटाई की चरम अवधि अक्टूबर–नवंबर के दौरान होती है। 15–25 दिनों के अंतराल पर तुड़ाई की जाती है। उपचार के दौरान अधिकतम हरा रंग प्राप्त करने के लिए पके कैप्सूल को काटा जाता है।

# भिंड़ी की खेती को प्रभावित करने वाले प्रमुख कीट एवं रोग

भारतीय किसान गेहूं कटाई के पश्चात अतिरिक्त आय करने के लिए सब्जियों की खेती करते हैं। इनमें सबसे ज्यादा खीरा, तोरई, बैंगन और भिंडी जैसी अन्य सब्जियों को उगाने में प्राथमिकता प्रदान करते हैं। लेकिन, भीषण गर्मी और निरंतर बढ़ते तापमान से सब्जियों की फसल को विभिन्न प्रकार के रोग घेर लेते हैं। अगर हम गर्मी और बढ़ते तापमान से भिंडी की फसल को प्रभावित करने वाले रोगों की बात करें, तो इसमें चूर्णिल फफूंद रोग, पीला मोजैक, फल छेदक और कटुआ कीट इसकी फसल को बड़ी हानि पहुंचाते हैं। यदि इन पर समय से काबू नहीं किया गया, तो इससे पूरी फसल पूर्णतय बर्बाद हो सकती है। कम समयावधि में शानदार कमाई करने के लिए भिंडी की फसल काफी लाभदायक हो सकती है। परंतु, इसकी फसल में लगने वाले रोगों को काबू में रखना अत्यंत आवश्यक है।

## 1. चूर्णिल फफूंद रोग

चूर्णिल फफूंद रोग का प्रभाव सूखे मौसम में पत्तियों पर होता है। भिंडी की फसल में इस रोग के लगने से पत्तियों पर सफेद रंग की परत जमनी प्रारंभ हो जाती है। साथ ही, पत्तियां धीरे–धीरे नीचे गिरने लग जाती हैं। इस रोग के संक्रमण के पश्चात टेढ़े–मेढ़े फल बनना शुरू हो जाते हैं। चूर्णिल फफूंद रोग को नियंत्रण में रखने के लिए प्रति लीटर पानी में 3 ग्राम सल्फर पाउडर को घोल कर खेतों में इसके मिश्रण का स्प्रे करना चाहिए। इसके अतिरिक्त आप इस रोग पर नियंत्रण करने के लिए प्रति लीटर पानी में 6उस कैराथीन को घोलकर भिंडी की फसल पर छिड़क. ाव कर सकते हैं।

## 2. पीला मोजैक रोग

भिंडी की फसल में पीला मोजैक रोग सफेद मक्खी के द्वारा फैलता है। इस रोग के चलते पत्तियों की शिराएं पीली पड़ने लग जाती हैं। यह रोग भिंडी की फसल में लगने के बाद फल के साथ–साथ पूरे पौधे को पीला कर देता है। किसान पीला मोजैक रोग से भिंडी की फसल को काबू में रखने के लिए प्रति लीटर पानी में 2उस इमिडाक्लोप्रिड को घोलकर खेतों में छिड़काव कर सकते हैं। इसके बाद, 15 दिन के अंतराल पर दोबारा से प्रति लीटर पानी में 2उस थाइमेट घोलकर फसलों पर छिड़काव कर देना है।

## 3. छेदक कीट

भिंडी की फसल में लगने वाले छेदक कीट काफी तीव्रता से फल को हानि पहुंचाते हैं। यह कीट भिंडी के फल के अंदर घुसकर इसमें अंडे दे देती है और तेजी से अपनी तादात बढ़ाती है। जब भिंडी की फसल में 5 से 10 प्रतिशत तक फूल निकल जाए, तो किसानों को उस समय प्रति 3 लीटर पानी में 1 ग्राम थियामेथोक्सम को घोलकर फसलों पर छिड़काव करना चाहिए। इसके 15 दिनों के पश्चात किसानों को बाकी रोगों से फसल को सुरक्षित रखने के लिए इमिडाक्लोप्रिड या क्युनालफॉस का स्प्रे करना चाहिए।

## 4. कटुआ कीट

कटुआ कीट भिंडी की फसल में लगने के पश्चात काफी तीव्रता से इसको हानि पहुंचाते हैं। ये कीट लगने के बाद भिंडी के पौधे के तने को काटने लग जाता है। वहीं, पौधा टूटकर नीचे गिरने लग जाता है। ऐसी स्थिति में किसान इस कीट को नियंत्रण में करने के लिए मिट्टी में मिलाने वाले कीटनाशकों का इस्तेमाल कर सकते हैं। किसान भिंडी की फसल को कटुआ कीट से नियंत्रण के लिए प्रति एकड़ में 10 किलोग्राम के हिसाब से थाइमेट–1 जी और कार्बोफ्यूरान 3जी को मृदा में मिला देना है।

## किसान भिंडी की कटाई कब करें?

किसानों को भिंडी की फसल में इन सभी कीटनाशकों का छिड़काव करने के बाद कटाई में सावधानी बरतनी चाहिए। भिंडी की फसल पर कीटनाशक का छिड़काव करने के लगभग 5 से 7 दिनों बाद ही भिंडी की हार्वेस्टिंग करनी चाहिए। ऐसा करने से दवा का प्रभाव काफी कम हो जाता है और मानव स्वास्थ्य को भी किसी तरह का कोई नुकसान नहीं होता है।

SINCE 1973 IN FARMER SERVICE
RASI SEEDS
RHR 333
संकर धान
साथ में बीएलबी सुरक्षा
हर परिस्थिति में
मैं हूँ खिलाड़ी
जीवाणु पर्ण झुलसा (BLB) के प्रति सहनशीलता
फसल अवधि 130 से 135 दिन
व्यापक अनुकूलनशीलता
RHR 333
HYBRID PADDY
A QUALITY RESEARCH PRODUCT OF RASI SEEDS (P) LTD
Breeding Excellence

# मशरूम की कृषि योग्य किस्में, तापमान, उर्वरक, लागत और आय की जानकारी

कृषकों के लिए मशरूम की खेती एक बेहतरीन आय का स्त्रोत है। मशरूम की खेती करने के लिए कम भूमि, पानी और समय की जरूरत होती है। अन्य कृषि उत्पादों के मुकाबले में मशरूम की खेती करने में लागत कम आती है और अच्छी आमदनी हांसिल की जा सकती है।

भारतीय किसान वर्तमान में पारंपरिक खेती से हटकर गैर पारंपरिक खेती की तरफ अपना रुझान कर रहे हैं और इसमें सफलता भी प्राप्त कर रहे हैं। अधिकांश किसान सब्जियों की खेती करना ज्यादा पंसद करते हैं। क्योंकि, इनसे कम समय में अधिक कमाई की जा सकती है। इनमें से एक मशरूम की खेती भी है।

## मशरूम एक अत्यंत लाभकारी खेती है

कृषकों के लिए मशरूम की खेती एक अत्यंत लाभकारी और व्यापक व्यवसाय है। मशरूम की खेती करने के लिए कम भूमि, पानी और समय की जरूरत पड़ती है। अन्य कृषि उत्पादों के मुकाबले में मशरूम की खेती करने में खर्चा कम आता है और बेहतरीन आय अर्जित की जा सकती है। मशरूम में विभिन्न तरह के पोषक तत्व, विटामिन्स, खनिज और प्रोटीन्स की भरपूर मात्रा पाई जाती है, जो हमारे स्वास्थ्य के लिए अत्यंत फायदेमंद है।

## मशरूम की कृषि योग्य कितनी किस्में हैं?

मशरूम की खेती करने से पूर्व आपको इसकी उन प्रजातियों का चयन करना चाहिए, जिससे कम वक्त में आपकी अच्छी–खासी आय हो सके। इसके अतिरिक्त, आपको इसकी खेती करने से पूर्व अपने नजदीकी बाजार की मांग के अनुरूप मशरूम की पैदावार करनी चाहिए। आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि संपूर्ण विश्व में मशरूम की कृषियोग्य 70 प्रजातियाँ विघमान हैं। लेकिन, भारत में सफेद बटर मशरूम, शिटाके मशरूम, ढींगरी (ऑयस्टर) मशरूम, पैडीस्ट्रा मशरूम और दूधिया मशरूम किस्मों को उगाया जाता है। इनकी खेती करके किसान अच्छा और मोटा मुनाफा कमा रहे हैं।

## मशरूम की खेती के लिए उचित तापमान और खाद

मशरूम की खेती करने के लिए किसानों को निश्चित तापमान का भी ख्याल रखना होता है। इसकी फसल लगाने के लिए 15 से 17 डिग्री सेल्सियस का तापमान काफी शानदार माना जाता है। इसकी खेती के लिए फूस के छप्परों का एक सेट निर्मित किया जाता है। साथ ही, इसके नीचे कंपोस्ट खाद का बेड बनाया जाता है। अब इसमें मशरूम के बीज डालकर इसकी खेती की जाती है। किसान इसकी खाद को तैयार करने के लिए गेहूं का भूसा, नीम की खली, पोटाश, यूरिया, चोकर और पानी को मिलाकर एक से डेढ़ माह तक सड़ाते हैं। जब इसके लिए खाद तैयार होती है, तो मोटी मोटी बेड बनाकर इसमें मशरूम के बीजों को रोपा जाता है। बीज बुवाई के उपरांत इसको ढ़क दिया जाता है और इसके लगभग एक महीने पश्चात मशरूम निकलना शुरू हो जाते हैं।

## मशरूम की खेती से लाखों में होगी आय

किसान भाइयों यदि आप मोटी आय करना चाहते हैं, तो मशरूम की खेती एक शानदार विकल्प माना जाता है। इसकी खेती के लिए कृषकों को लंबे–चौड़े खेत की आवश्यकता नहीं पड़ती है। बतादें, कि एक कमरा ही इसके लिए पर्याप्त होता है। कम खर्च और कम जगह के उपरांत भी किसान इसकी खेती करके कुल खर्च का तीन गुना तक सुगमता से कमा सकते हैं। एक कमरे में मशरूम की खेती करने पर 50 से 60 हजार रुपए का खर्चा आता है और इससे 3 से 4 लाख रुपए की सुगमता से आय से हो जाती है।

# जून में करें इन सब्जियों की खेती मिलेगा अच्छा–खासा मुनाफा

किसान भाई जून के महीने में बहुत सारी फसलों की बुवाई कर सकते हैं। क्योंकि, जून में तापमान भी काफी कम रहेगा और बारिश भी पर्याप्त मात्रा में होती रहेगी। आज हम आपको ऐसी सब्जियों के विषय में बताने वाले हैं, जो कि बेहद कम समयावधि में तैयार हो सकती हैं। इसके अतिरिक्त इनकी खेती से किसान अगले तीन चार माह तक बंपर आमदनी कर सकते हैं।

## जून में इन बेलवर्गीय फसलों की खेती करें

बेलवर्गीय फसलों में किसान जून के माह में करेला, गिलकी, लौकी, तोरई और सेम की फसलों की बिजाई कर सकते हैं। बरसात के मौसम में ये बेलवर्गीय फसल अधिक उपज प्रदान करती हैं। साथ ही, रोग मुक्त भी रहते हैं। यदि देखरेख अच्छी तरीके से हो तो करेला, गिलकी, लौकी, तोरई और सेम 30 से 40 दिन में पककर तैयार हो जाते हैं। वहीं, इनसे चार–पांच माह तक उपज प्राप्त की जा सकती है, जिससे किसानों की शानदार आमदनी हो सकती है।

## जून में करें मेथी, पालक और धनिया की खेती

मेंथी, पालक और धनिया की गिनती नकदी फसलों में की जाती है। आप इन सब्जियों की फसलों की बुवाई 15 जून के आसपास कर सकते हैं। इन्हें मॉनसून की बारिश होने के दो सप्ताह बाद या दो पहले खेतों में लगाया जाता है। ये तीनों सब्जियां बेहद कम समय में पककर तैयार हो जाती हैं। वहीं, बरसात के वक्त बाजार में इनकी कीमत भी सामान्य से ज्यादा मिलती है। ऐसे में किसान जून माह में मेथी, पालक और धनिया उगाकर काफी अच्छी आमदनी कर सकते हैं।

## जून में करें भिंडी, खीरा और प्याज की खेती

जून और जुलाई के महीने में किसान भिंडी व खीरा की फसल भी लगाकर अच्छी कमाई कर सकते हैं। अगस्त से इसकी पैदावार मिलनी चालू हो जाती है, जो अक्टूबर से नवंबर माह तक मिलता रहता है। बाजार में इन सब्जियों के भाव भी सदैव अच्छे मिलते हैं। इसके अतिरिक्त बाजार में प्याज की कीमत में हमेशा उतार–चढाव देखने को मिलता है। ऐसी स्थिति में किसान जून में प्याज की भी खेती करके शानदार मुनाफा अर्जित कर सकते हैं। बुवाई के बाद प्याज को तैयार होने में 30 से 40 दिन का वक्त लग जाता है। उसके पश्चात कटाई के साथ कमाई शुरू हो जाती है।

ट्रैक्टर की जानकारी के लिए हमारी वेबसाइट www.merikheti.com पर विजिट करे

# लीची की खेती से इस बार किसानों को मिलेगा मोटा मुनाफा, जानें क्यों

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि इस बार आपको लगभग 15 मई तक बाजार में लीची आना शुरू हो जाएगी। बिहार के लोग ऑनलाइन भी इसकी खरीददारी कर सकेंगे। लीची का सेवन करने वालों के लिए बहुत अच्छी खबर है। बिहार के मुजफ्फरपुर की सुविख्यात शाही लीची कुछ ही दिनों में बागानों से निकलने वाली है। बिहार की मशहूर शाही लीची आगामी 20 दिनों में आसानी से बाजार में मिल जाएगी। इस बार राज्य सरकार की तरफ से खास तैयारियाँ की गई हैं। रेल और हवाई जहाज की सहायता से देश के भिन्न–भिन्न राज्यों व विदेशों में भी शाही लीची भेजने की तैयारी है।

## लीची के बेहतर उत्पादन की आशा

इस बार लीची की काफी शानदार पैदावार होने की संभा. वना है। बिहार के अतिरिक्त मुंबई, नागपुर, बेंगलुरु, चेन्नई, लखनऊ और विशाखापट्टनम जैसे शहरों में 18 मई से लीची भेजना प्रारंभ कर दिया जाएगा। कोल्ड चेन की सहायता से 20 डिग्री सेल्सियस तापमान पर इसे भेजा जाएगा। इन शहरों में 10 से 15 किलो के पैक भेजे जाएंग. ` । वहीं, बिहार के अलग–अलग शहरों में एक किलो लीची का कंज्यूमर पैक व पांच किलो का फैमिली पैक निर्मित किया जाएगा। इसको ताजा रखने के लिए बीते वर्ष खुद से तैयार हर्बल सॉल्यूशन का परीक्षण सफल रहा है। इस बार इसका इस्तेमाल किया जाएगा, ताकि आप ताजा लीची का स्वाद ले सकें।

## लीची के सफल यातायात के लिए क्या तैयारी है ?

मुजफ्फरपुर के किसान के अनुसार, वर्ष 1993 में ही गांव में प्रोसेसिंग प्लांट लगाया गया था, जिसकी वजह से वह लीची के पल्प को भी बेचते हैं। उन्होंने कहा कि इस बार मौसम साथ नहीं दे रहा है। इस वजह से लीची काफी कमजोर हो जा रही है। इसके फल भी गिर रहे हैं। फिर भी बगान से लगभग 100 टन से ज्यादा लीची की पैदावार होगी। इस बार बिहार सरकार की सहायता से पैक हाउस तैयार कर रहे हैं। साथ ही, रेफ्रिजरेटर वैन की भी खरीदारी करेंगे। इससे छह डिग्री सेल्सियस में लीची पहुंचाई जाएगी।

## किसान भाई ऑनलाइन भी लीची खरीद सकेंगे

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि इस बार लगभग 15 मई तक बाजार में लीची उपलब्ध हो जाएगी। बिहार के लोग ऑनलाइन भी इसकी खरीदारी कर सकेंगे। कोरोना काल में इस सुविधा को प्रारंभ किया गया था। इस सीजन में सभी बागों से लगभग 3,000 टन लीची की पैदावार होगी। यहां से विशेषकर यूपी, बिहार व झारखंड में 15 व 10 किलो के पैक में लीची भेजी जाएगी।

NAYA
SWARAJ,
MERA
SWARAJ
SWARAJ 744 FE
SWARAJ 855 FE

# Mahindra 575 DI XP Plus ट्रैक्टर: फीचर्स, स्पेसिफिकेशन और कीमत

ट्रैक्टर निर्माण के मामले में महिंद्रा कंपनी का नाम सबसे आगे आता है। इस कंपनी के ट्रैक्टर किसान के बिच बहुत लोकप्रिय है। महिंद्रा कंपनी के ट्रैक्टर किसानो के बीच कम खपत में अच्छा कार्य करने के लिए जाने जाते है। कंपनी समय समय पर किसानों की जरूरत के हिसाब से ट्रैक्टरों का निर्माण करती है। इसी कड़ी में कार्य करते हुए कंपनी ने किसान के लिए Mahindra 575 DI XP चसने का निर्माण किया है। Mahindra 575 DI XP चसने एक 45 एचपी का शक्तिशाली ट्रैक्टर है। इस लेख में हम आपको इस ट्रैक्टर के फीचर्स, स्पेसिफिकेशन और Mahindra 575 DI XPचसने चतपबम के बारे में सम्पूर्ण जानकारी देंगे।

## Mahindra 575 DI XP Plus की विशेषता

Mahindra 575 DI XP Plus शक्तिशाली ट्रैक्टर है इस ट्रैक्टर का निर्माण किसानों का कार्य आसानी करने के लिए किया गया है। महिंद्रा का ये ट्रैक्टर जबरदस्त फीचर्स के साथ में आता है। इस ट्रैक्टर की इंजन पावर 46 एचपी है, जिससे ये ट्रैक्टर सभी कार्य आसानी से कर सकता है। इस टैक्टर को सबसे ज्यादा छोटे और मध्यम वर्ग के किसान पसंद करते हैं क्योंकि इससे रफ एंड टफ काम भी आसानी से किया जा सकता है।

## Mahindra 575 DI XP Plus इंजन पावर

Mahindra 575 DI XP चसने के इंजन की बात करे तो इस ट्रैक्टर में आपको 46 एचपी का शक्तिशाली इंजन मिल जाता है। ट्रैक्टर के इंजन में आपको 4 सिलिंडर मिल जाते है, इसी के साथ इस ट्रैक्टर की क्यूबिक कैपेसिटी (cubic capacity) 2979 CC है। Mahindra 575 DI XP चसने ट्रैक्टर का इंजन 2000 RPM पर उत्कृष्ट प्रदर्शन करता है।

ट्रैक्टर के इंजन में 3 stage oil bath type with Pre Cleaner एयर फिल्टर दिया गया है। Mahindra 575 DI XP Plus ट्रैक्टर के इंजन को ठंडा रखने के लिए इस ट्रैक्टर esa Water Cooled system दिया गया है। ट्रैक्टर में फ्यूल इंजेक्शन पंप प्दसपदम का दिया गया है। PTO HP की बात करे तो इस ट्रैक्टर में 42 hp की पीटीओ पावर दी गई है जिससे की पीटीओ से चलने वाले सभी उपकरणों को आसानी से चलाया जा सकता है। 6 Spline वाला पीटीओ इस ट्रैक्टर में आपको मिलत है।

## Mahindra 575 DI XP Plus ट्रांसमिशन (Transmission)

Mahindra 575 DI XP Plus के Transmission की बात करे तो इस ट्रैक्टर में Partial Constant Mesh ट्रांसमिशन आपको मिल जाता है। ट्रेक्टर के गियर बॉक्स में आपको 8 Forward + 2 Reverse गियर्स आपको मिल जाते है। इस ट्रैक्टर की Forward Speed 3-1 & 31-3 kmph है और Reverse Speed 4 - 3 & 12 - 5 kmph है।

## Mahindra 575 DI XP Plus Brakes और Steering

Mahindra 575 DI XP plus ब्रेक्स की बात करे तो इस इस ट्रैक्टर को नियंत्रण करने के लिए इस ट्रैक्टर में Oil Immersed Brakes आपको मिल जाते है। डीपदकतं 575 DI के OIB ब्रेक से ट्रैक्टर को हर स्थिति में आसानी से नियंत्रित किया जा सकता है। ट्रैक्टर में Steering क्नंस Acting Power steering / Manual Steering (Optional) दोनों दिए गए है। 1500 किलोग्राम की शक्तिशाली वजन उठाने की क्षमता के साथ में ये ट्रैक्टर आता है जिससे की आप ढुलाई के कार्य भी आसानी से कर सकते है। इस ट्रैक्टर की Lifting Capacity अधिक होने से ट्रैक्टर और भी शानदार हो जाता है। ट्रैक्टर का कुल वजन 1890 किलोग्राम है।

## Wheels And Tyres

ट्रैक्टर में टायर्स की बात करे तो इस ट्रैक्टर में फ्रंट टायर 6.00 x 16 और त्मंत टायर 14.9 x 28 के दिए गए है।

## Mahindra 575 XP Plus Price

Mahindra 575 XP Plus Price की बात करे तो इस ट्रैक्टर की कीमत 7.40 – 7.80 लाख रूपए तक है, कीमत में कई स्थनो पर थोड़ा फर्क भी देखने को मिलता है। इस ट्रैक्टर के साथ में कंपनी ने 6 साल की वार्रन्टी प्रदान की है।

# स्वराज कंपनी द्वारा निर्मित किसानों के लिए टॉप 5 ट्रैक्टर

भारत में स्वराज कंपनी के ट्रैक्टर किसानों द्वारा बहुत पसंद किए जाते है। स्वराज कंपनी के ट्रैक्टर खेती के कार्यों में बहुत अच्छा प्रदर्शन करते है। 1974 में स्वराज ट्रैक्टर्स ने भारत का पहला स्वदेशी ट्रैक्टर बनाना था। आज स्वराज एक तेजी से बढ़ती कंपनियों में से एक है, जो भारत में शीर्ष ट्रैक्टर ब्रांडों में से एक है और एक विशाल पोर्टफोलियो में ट्रैक्टर और कृषि मशीनरी बनाती है। इस लेख में हम आपको स्वराज कंपनी के टॉप 5 ट्रैक्टरों के बारे में जानकारी देंगे।

### 1. स्वराज टारगेट 630

स्वराज टारगेट 630 29 एचपी इंजन के साथ आता है जो की बहुत अच्छी माइलेज प्रदान करता है। यह स्वराज 630 शक्तिशाली ट्रैक्टरों में से एक है। इस ट्रैक्टर के इंजन में 3 सिलिंडर कंपनी ने प्रदान किए है। स्वराज 630 ऑयल इम्सर्ड ब्रेक के साथ निर्मित है जो खेतों में सुरक्षित ड्राइविंग का समर्थन करता है। इसमें स्मूथ बैलेंस्ड पावर स्टीयरिंग है। यह खेतों पर लंबे समय तक काम करने के लिए 27 लीटर की बड़ी फ्यूल टैंक कैपेसिटी प्रदान करता है। इस ट्रैक्टर में सिंक्रोमेश ट्रांसमिशन और 9 फॉरवर्ड. 3 रिवर्स गियरबॉक्स हैं।

### 2. स्वराज 724 XM

इस ट्रैक्टर के इंजन की बात करे तो इस ट्रैक्टर में आपको 25 Hp का 2 सिलिंडर वाला इंजन मिल जाता है। स्वराज 724 Hp ट्रैक्टर के इंजन की क्यूबिक कैपेसिटी 1824 सीसी इंजन के साथ 1800 तध्उपद इंजन रेटेड आरपीएम जनरेट करता है। इस ट्रैक्टर में वजन उठाने की क्षमता की बात करे तो इस ट्रैक्टर में आपको 1000 किलोग्राम तक की वजन उठाने की क्षमता मिलती है। इस ट्रैक्टर की कीमत 5.10–5.50 लाख रूपए तक है।

### 3. स्वराज 855

आजकल किसानों को ये ट्रैक्टर बहुत पसंद हैं। किसानों के पिच ने ये ट्रैक्टर लोकप्रिय बनाए हैं, 52 हॉर्सपॉवर का इंजन इस ट्रैक्टर को चलाता है। 3308 सीसी की क्यूबिक कैपेसिटी वाले इस ट्रैक्टर में कंपनी ने 3 सिलिंडर दिए हैं। इस ट्रैक्टर में तेल में भरे ब्रेक हैं। Swraj 855 ट्रैक्टर का मूल्य 7.90 से 8.40 लाख रुपये है। कई जगहों पर कीमतों में थोड़ा अंतर भी देखने को मिलता है।

### 4. स्वराज 744 FE

स्वराज 744 ट्रैक्टर में आपको 48 HP एचपी कैटेगिरी का इंजन आता है जिसमे सिलेंडर की संख्या 3 दी गयी है। ट्रैक्टर की पीटीओ पावर की बात करे तो स्वराज 744 मि ट्रैक्टर में आपको 41.8 HP का पीटीओ मिलता है। जिससे की आप हर प्रकार के पीटीओ से चलने वाले यंत्र को चला सकता है। गियर बॉक्स की बात करे तो स्वराज 744 FE ट्रैक्टर में आपको 8 फॉरवर्ड. 2 रिवर्स स्पीड के गियर्स मिलते है। ब्रेक की बात करे तो इस ट्रैक्टर में ड्राई डिस्क ब्रेक/आयल इम्मरसेड ब्रेक (ऑप्शनल) ब्रेक मिलते है और साथ ही कंपनी इस ट्रैक्टर की वारंटी 6000 Hours Or 6 साल की प्रदान करती है। स्वराज 744 FE ट्रैक्टर की कीमत लाख 6.90 लाख से 7.40 लाख रूपए तक है कीमत में कई स्थानों पर थोड़ा फरक भी देखने को मिलता है।

### 5. स्वराज 963 एफई

स्वराज 963 एफई ट्रैक्टर में 60 एचपी का शक्तिशाली इंजन है जिसमें 3 सिलेंडर है। स्वराज 963 एफई में फ्रंट टायर 7.5 X 16 और रियर टायर 16.9 X 28 साइज में आते हैं इसके इंजन की क्यूबिक कैपेसिटी 3478 सीसी है। यह इंजन उच्च प्रदर्शन देने के लिए 2100 आरपीएम जेनरेट करता है। साथ ही, इंजन 53.6 एचपी की अधिकतम आउटपुट पीटीओ पावर पैदा करता है। स्वराज 963 एफई में एडवांस वाटर–कूल्ड तकनीक और एक ड्राई–टाइप एयर फिल्टर है। इस ट्रैक्टर की कीमत की बात करे तो इस ट्रैक्टर की कीमत 10.40 लाख रूपए तक है कीमत में कई स्थानों पर थोड़ा फरक भी देखने को मिलता है। इस लेख में आपने मैसी स्वराज के टॉप 5 ट्रैक्टर मॉडल्स के बारे में जाना है जिनको खरीद कर आप आपने खेती के कार्य को आसान बना सकते है। मेरी खेती पर आपको खेतीबाड़ी और ट्रैक्टर उपकरणों की सटीक जानकारी मिलती है। अगर आप ट्रैक्टरों, उपकरणों या खेतबाड़ी से जुड़ी और अधिक जानकारी पाना चाहते है तो वेबसाइट पर जा सकते है।

# एस्कॉर्ट और कुबोटा का एक दूसरे में विलय किसानों की उन्नति का मार्ग

जब अपने अपने क्षेत्र की दो दिग्गज कंपनियों का विलय या साझा होता है, तो उस इलाके में अवश्य एक नयापन उस क्षेत्र के उपयोगकर्ताओं को मिलता है।

जी हाँ, हम बात कर रहे हैं कृषि और निर्माण उपकरण के क्षेत्र में भारत में अपना नाम कमाने वाली कंपनी एस्कॉर्ट और जापान की दिग्गज कृषि उपकरण बनाने वाली कंपनी कुबोटा की। इन दोनों कंपनियों का मिलन होने से भारतीय कृषकों के लिए टेक्नोलॉजी और विश्वास का नया सवेरा होने जा रहा है। जी हाँ, एस्कॉर्ट कुबोटा लिमिटेड अगले 3 से 4 सालों में 4500 करोड़ रुपये का निवेश करने जा रही है, जिससे कि इनकी उत्पादन क्षमता 2 गुना अधिक हो जाएगी। कंपनी ने राजस्थान के अलवर जनपद के घिलोथ में एक नए विनिर्माण संयंत्र को स्थापित करने की योजना तैयार की है, जिसमें कि कंपनी आने वाले वर्षों में नवीन तकनीक के साथ अच्छी गुणवत्ता वाले उत्पाद निर्मित करेगी।

## जमीन खरीद के लिए बजट तैयार कर लिया गया है

कंपनी इस वित्तीय वर्ष में जमीन की खरीद करके उस पर निर्माण कार्य प्रारम्भ कर देगी। एक समाचार पत्र को जानकारी देते हुए कंपनी के CFO भरत मदन ने बताया, "ग्रीनफील्ड प्लांट में ट्रैक्टर उत्पादन क्षमता को दोगुना करना, एक नई इंजन लाइन और चरणों में एक निर्माण उपकरण लाइन स्थापित करना शामिल होगा। कुल मिलाकर, ग्रीनफील्ड परियोजना की लागत अगले तीन–चार वर्षों में 4,000 करोड़ रुपये से 4,500 करोड़ रुपये हो सकती है। जमीन की खरीद के लिए करीब 400 से 4500 करोड़ रुपये का बजट है, जो कि जल्दी से जल्दी भूमि खरीद के बाद उस पर निर्माण प्रारंभ हो जायेगा, जो कि संभव है की इस वित्तीय वर्ष के अंत तक निर्माण कार्य शुरू हो जाये।

## कंपनी की वर्तमान में निर्माण क्षमता कितनी है?

वर्तमान में, कंपनी की कुल वार्षिक ट्रैक्टर उत्पादन क्षमता 1.7 लाख इकाई है। इसका मुख्य संयंत्र फरीदा. बाद में मौजूद है। इसकी इंजन उत्पादन क्षमता वार्षिक 1.5 लाख यूनिट के करीब है और वर्तमान में कुबोटा ट्रेक्टर के इंजन को जापान से आयात किया जा रहा है। इससे इसकी कीमत में भी काफी इजाफा होता है। जिसको कम करने के लिए कंपनी नए सयंत्र में इसका निर्माण करने लगेगी।

## अप्रैल, मई, जून की औघोगिक विकास पर भरत मदन

वित्त वर्ष 2025 के लिए ट्रैक्टर बिक्री के दृष्टिकोण पर, उन्होंने कहा कि उद्योग "धीमी गति से वृद्धि" की उम्मीद कर रहा है, क्योंकि फसल चक्र के अनुसार मांग बढ़ने से वित्त वर्ष की दूसरी छमाही में ही गति बढ़ने की संभावना है। उन्होंने कहा, ष्पहली तिमाही स्पष्ट रूप से नरम है। हमें पहली तिमाही में किसी भी वृद्धि की उम्मीद नहीं है। अप्रैल में विकास सामान्य रहा है और मई में हमें कुछ गिरावट की संभावना लग रही है। इसलिए कुल मिलाकर पहली तिमाही अभी भी गिरावट वाली रहेगी। कृषि क्षेत्र की ग्रोथ में मानसून का भी बहुत बड़ा योगदान होता है। एस्कॉर्ट कुबोटा के मर्जर से भारतीय किसानों को क्या फायदा मिलता है, यह आने वाला वक्त ही बताएगा।

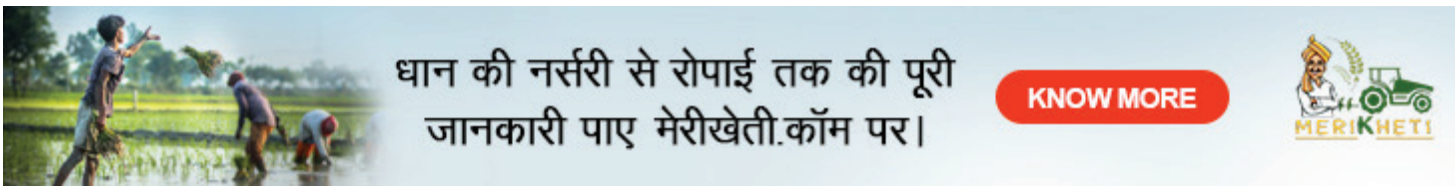

# पॉवरट्रैक यूरो 50 आता है शानदार इंजन क्षमता के साथ

खेती के कार्यों को करने के लिए ट्रैक्टर का सबसे अधिक योगदान है। ट्रैक्टर से सभी कार्य किसान आसानी से कर सकते है। किसान ज्यादा. तर उन ट्रैक्टरों को खरीदना पसंद करते है जिसमें सभी आधुनिक फीचर्स और शक्तिशाली इंजन भी हो। आज के इस लेख में हम आपको एक ऐसे ट्रैक्टर के बारे में बताने वाले है जो की 50 एचपी के शक्तिशाली इंजन के साथ में आता है।

## पॉवरट्रैक यूरो 50 की इंजन पावर क्या है?

इस ट्रैक्टर के इंजन की बात करे तो ये ट्रैक्टर शक्तिशाली इंजन के साथ में आता है। पॉवरट्रैक यूरो 50 ट्रैक्टर में आपको 2761 सीसी कैपेसिटी वाला 50 एचपी का इंजन मिलता है। इस ट्रैक्टर के इंजन में 3 सिलेंडर आपको मिलते है। ट्रैक्टर के इंजन को ठंडा रखने के लिए इस ट्रैक्टर में कूलैंट कूल्ड (Coolant Cooled) इंजन दिया गया है। यह ट्रैक्टर Oil इंजी जलचम एयर फिल्टर के साथ आता है, जो इसके इंजन को धूल मिट्टी से सुरक्षित रखता है। इस ट्रैक्टर का इंजन 2000 आरपीएम उत्पन्न करता है।

## पॉवरट्रैक यूरो 50 फीचर्स और स्पेसिफिकेशन्स (Powertrac Euro 50 Features and Specifications)

कंपनी ने ट्रैक्टर में 8 Forward. 2 Reverse गियर वाला गियरबॉक्स दिया गया है। पॉवरट्रैक यूरो 50 ट्रैक्टर Single/Dual क्लच के साथ आता है और ये साइड शिफ्ट टाइप ट्रांसमिशन (Side Shift transmission) के साथ में आता है। कंपनी के इस ट्रैक्टर की 2.8 से 30.8 kmph फॉरवर्ड स्पीड और 3.6 से 11.1 kmph रिवर्स स्पीड रखी है। यह ट्रैक्टर MRPTO/Dual टाइप पावर टेकऑफ में आता है, जो 540/1800 आरपीएम उत्पन्न करती है। कंपनी ने अपने इस ट्रैक्टर में Multi Plate Oil Immersed Disc ब्रेक्स दिए है, पॉवरट्रैक यूरो 50 ट्रैक्टर में 2 व्हील ड्राइव आता है। इसमें आपको 6.5 x 16 फ्रंट टायर और 14.9 x 28 रियर टायर देखने को मिल जाते हैं।

## पॉवरट्रैक यूरो 50 की कीमत क्या है? (Powertrac Euro 50 Price)

इस ट्रैक्टर की कीमत की बात करे तो इस ट्रैक्टर की कीमत 8.10 लाख से 8.40 लाख रूपए है। इस ट्रैक्टर की कीमत में कई स्थानों कर थोड़ा फरक भी आपको देखने को मिल जाते है। कंपनी अपने Powertrac Euro 50 Tractor के साथ 5 साल की वारंटी प्रदान करती है।

# आयशर 368 ट्रैक्टर की कीमत किसानों के बजट में, जानिए इसके फीचर्स के बारे में यहां

आयशर कंपनी के ट्रैक्टर कई सालों से किसानो के बिच में बहुत लोकप्रिय है। ये ट्रैक्टर खेत पर अच्छा प्रदर्शन करने के लिए जाने जाते है। आज के इस लेख में हम आपके लिए इसी कंपनी का एक ऐसा ट्रैक्टर ले कर आए है जो की बहुत शक्तिशाली है। ये ट्रैक्टर है आयशर 368 जो की 38 HP श्रेणी में आता है। इस लेख में आपको आयशर ट्रैक्टर 368 की कीमत और इसके फीचर्स के बारे में सम्पूर्ण जानकरी देंगे।

## म्पबीमत 368 ट्रैक्टर की इंजन पावर क्या है?

- Eicher 368 इस ट्रैक्टर के इंजन की बात करे तो इस ट्रैक्टर में आपको शक्तिशाली 38 HP का इंजन मिल जाता है, जिसमे सिलेंडर की संख्या 3 है और इस ट्रैक्टर का इंजन 2150 RPM पर उत्कृष्ट प्रदर्शन करता है।
- इस ट्रैक्टर के इंजन की cubic capacity 2945 CC है। आयशर ट्रैक्टर 368 की कीमत इस की इंजन पावर के आधार पर ही निर्धारित की गयी है।
- ट्रैक्टर के इंजन को ठंडा रखने के लिए इस ट्रैक्टर में वाटर कूल्ड कूलिंग सिस्टम आपको मिल जाता है।
- आयल बाथ टाइप का एयर फिल्टर इसमें आपको मिलता है। आयशर ट्रैक्टर 368 की कीमत आपको इस लेख के अंत में देखने को मिलेगी।

## आयशर 368 ट्रैक्टर के फीचर्स और स्पेसिफिकेशन्स

- ट्रैक्टर के ट्रांसमिशन की बात करे तो इस ट्रैक्टर में आपको कॉम्बिनेशन ऑफ कांस्टेंट – स्लाइडिंग मेष (Sliding Mesh) वाला ट्रांसमिशन मिल जाता है। साथ ही गियरबॉक्स पोजीशन सेंट्रल शिफ्ट है।
- ट्रैक्टर में 8 फॉरवर्ड + 2 रिवर्स आपको मिल जाते है। मल्टी डिस्क तेल में डूबे हुए ब्रेक्स / ड्राई डिस्क ब्रेक दोनों टाइप के ब्रेक इस ट्रैक्टर में आपको मिल जाते है।
- Eicher 368 ट्रैक्टर में स्टीयरिंग पावर स्टीयरिंग दिया गया है। पावर स्टीयरिंग होने से ट्रैक्टर के चालक को ट्रैक्टर को चलने में भी मजा आता है, पावर स्टीयरिंग से कम जगह में भी ट्रैक्टर आसानी से घूम जाता है। पावर स्टीयरिंग होने से सड़क पर भी ट्रैक्टर को नियंत्रण आसान हो जाता है। इस से जब आप खेत में काम करते है उस समय ट्रैक्टर सँभालने में आसानी होती है।
- तेल में डूबे हुए ब्रेक ट्रैक्टर होने से ट्रैक्टर को कठिन परिस्थितियों को भी पार करने में मदद मिलती हैं। उदाहरण के लिए ढलानों, चिकनी जगह और सड़क पर नियंत्रण करने में आसानी मिलती है।
- Eicher 368 ये टायर खुली जगहों, जंगली क्षेत्रों और मैला मैदान में स्थिरता और कर्षण प्रदान करते हैं। ट्रैक्टर में आगे के टायर 6.0x16 के और पीछे के टायर 13.9x28 के आते है और साथ ही, टायरों में एक विशेष ट्रेड डिजाइन होता है जो मिट्टी के संघनन को कम करता है और कर्षण को बढ़ाता है।
- ट्रैक्टर की लिफ्टिंग कैपेसिटी 1650 किलोग्राम है। ट्रैक्टर में अधिक लिफ्टिंग कैपेसिटी क्षमता होने से ट्रैक्टर आसानी से भारी से भारी वजन को भी उठा सकता है।
- इस ट्रैक्टर में उपकरणों को संचालित करने के लिए सटीक हाइड्रोलिक्स के हिसाब से बिलकुल सही है। ट्रैक्टर में नई तकनीक के सेंसिंग पॉइंट्स आपको मिलता है।

## आयशर ट्रैक्टर 368 की कीमत?

आयशर ट्रैक्टर 368 की कीमत की बात करे तो आयशर ट्रैक्टर 368 की कीमत 6.18 – 6.73 लाख रुपत तक है कीमत में कई स्थनो पर थोड़ा फरक भी देखने को मिल जाता है। आयशर ट्रैक्टर 368 की कीमत भारत के किसानो के बजट के आधार पर निर्धारित की गयी है।

# Amistar Xtra

## Fungicide

Disease

# मिट्टी जांच क्यों है आवश्यक? जानिए सम्पूर्ण जानकारी

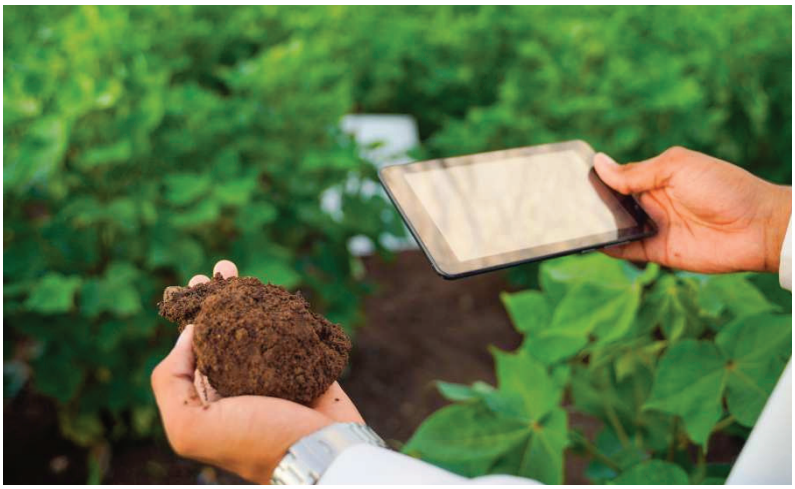

फसल उत्पादन और मृदा स्वास्थ्य दोनों के लिए संतुलित पौध पोषण बहुत महत्वपूर्ण है। मिट्टी परीक्षण खेत की मिट्टी में उपस्थित विभिन्न प्रमुख और गौण पोषक तत्वों की मात्रा की जानकारी देता है। मिट्टी परीक्षण के नतीजों को देखते हुए कृषक बन्धु उर्वरकों का सही मात्रा में उपयोग कर अधिक उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं।

## मिट्टी परीक्षण क्या होता है?

मिट्टी परीक्षण का अर्थ है पौधों की मिट्टी में पोषक तत्वों की उपलब्ध मात्राओं का रासायनिक परीक्षणों द्वारा आंकलन करना और विभिन्न मृदा विकास विशेषताओं जैसे मृदा लवणीयता, क्षारीयता और अम्लीयता की जांच करना। फसल उत्पादन के लिए मिट्टी परीक्षण बहुत आवश्यक है।

## मिट्टी के कितने परीक्षण होते हैं?

पौधों के सही विकास और वृध्दि के लिए सामान्य रूप से सोलह पोषक तत्व आवश्यक हैं। पौधे वायु और पानी से प्रायः पहले तीन पोषक तत्व (कार्बन, हाइड्रोजन, आक्सीजन) प्राप्त करते हैं, शेष 13 पोषक तत्व नत्रजन, फास्फोरस, पोटाश, कैल्शियम, मैग्निशियम और सल्फर) भूमि से प्राप्त होते हैं। आमतौर पर, ये सभी पोषक तत्व प्राकृतिक रूप से जमीन में उपलब्ध रहते हैं। खेत में लगातार फसल लगने से मिट्टी से इन सभी आवश्यक तत्वों का बहिष्कार होता रहता है। जब पौधों को अच्छी तरह से पोषित नहीं किया जाता, तो फसलों की वृद्धि सही नहीं हो पाती, जिससे पौधे कमजोर हो जाते हैं और रोगों, कीटों और अन्य रोगों से संक्रमित होने की अधिक संभावना रहती है। नतीजतन, फसल उत्पादन कम होता है और अतिरिक्त उर्वरक भी महंगे होते जा रहे हैं। वास्तव में, खेत में इन पोषक तत्वों का उपयोग सिर्फ आवश्यकतानुसार किया जा सकता है और इससे खेती को लाभ मिल सकता है। मिट्टी परीक्षण ही खेतो में उर्वरक की सही मात्रा का पता लगा सकता है। इसलिए, उर्वरकों का अधिकतम उपयोग करने और अधिक फसल उत्पादन करने के लिए मिट्टी परीक्षण अनिवार्य है।

## मिट्टी परीक्षण के लाभ क्या है?

- खेत में खाद और उर्वरक की मात्रा की सिफारिश करने के लिए मिट्टी में पोषक तत्वों के स्तर की जांच करके फसल और किस्म के अनुसार तत्वों की सन्तुलित मात्रा का निर्धारण किया जा सकता है।
- मृदा उर्वरता मानचित्र बनाना, यह मानचित्र विभिन्न फसल उत्पादन योजनाओं का निर्धारण करने के लिए महत्वपूर्ण है और प्रत्येक क्षेत्र में उर्वरक उपयोग की जानकारी प्रदान करता है।
- मृदा की क्षारीयता, अम्लीयता, लवणीयता और मृदा अम्लीयता की पहचान और सुधार करने के लिए सुधारकों की मात्रा और प्रकार की सिफारिश कर कृषि योग्य जमीन बनाने के लिए महत्वपूर्ण सलाह और सुझाव मिलता है।
- फल के बाग लगाने के लिएभूमि की उपयुक्तता का पता लगाना।

## मिट्टी परीक्षण के लिए नमूना कैसे एकत्रीत करे?

खेत में मिट्टी का नमूना जिग–जैग से घूमाकर दस से पंद्रह स्थानों पर निशान लगाकर लेना चाहिए, ताकि सभी क्षेत्रों को शामिल किया जा सके। खेत में जहा स्थानो का चयन किया गया है उनकी उपरी सतह से घास–फूस, कूडा आदि करकट हटा दे। हर जगह 15 सें.मी. (6 –9 इंच) गहरा ट आकार का गड्ढा खोदे। गड्ढे को साफ करने के बाद, खुरपी से एक तरफ उपर से नीचे तक 2 सेमी मोटी मिट्टी की तह को निकाल ले, फिर इसे ट्रे या साफ बाल्टी में डाल दें।

तैयार मिट्टी को हाथ से अच्छी तरह मिलाकर साफ कपडे पर डालकर गोल ढेर बना लें। अंगूली से ढेर को चार बराबर भागों में बाँध दें। अब बाकी दो हिस्सों की मिट्टी को फिर से अच्छी तरह से मिलाकर गोल बनाओ। जब तक लगभग आधा किलो मिट्टी रह जाती है, इस प्रक्रिया को दोहराया जाना चाहिए। सूखे मिट्टी नमूने को एक साफ प्लास्टिक थैली में डाल दें, फिर इसे कपड़े की थैली में डाल दें। नमूने के साथ एक सूचना पत्रक, जिस पर पूरी जानकारी लिखी हो, एक प्लास्टिक की थैली में अंदर और कपड़े की थैली के बाहर बांध दें। खेत की मिटटी से तैयार नमूनों को मिट्टी परीक्षण प्रयोगशाला भेजे वहां इसकी जांच होगी।

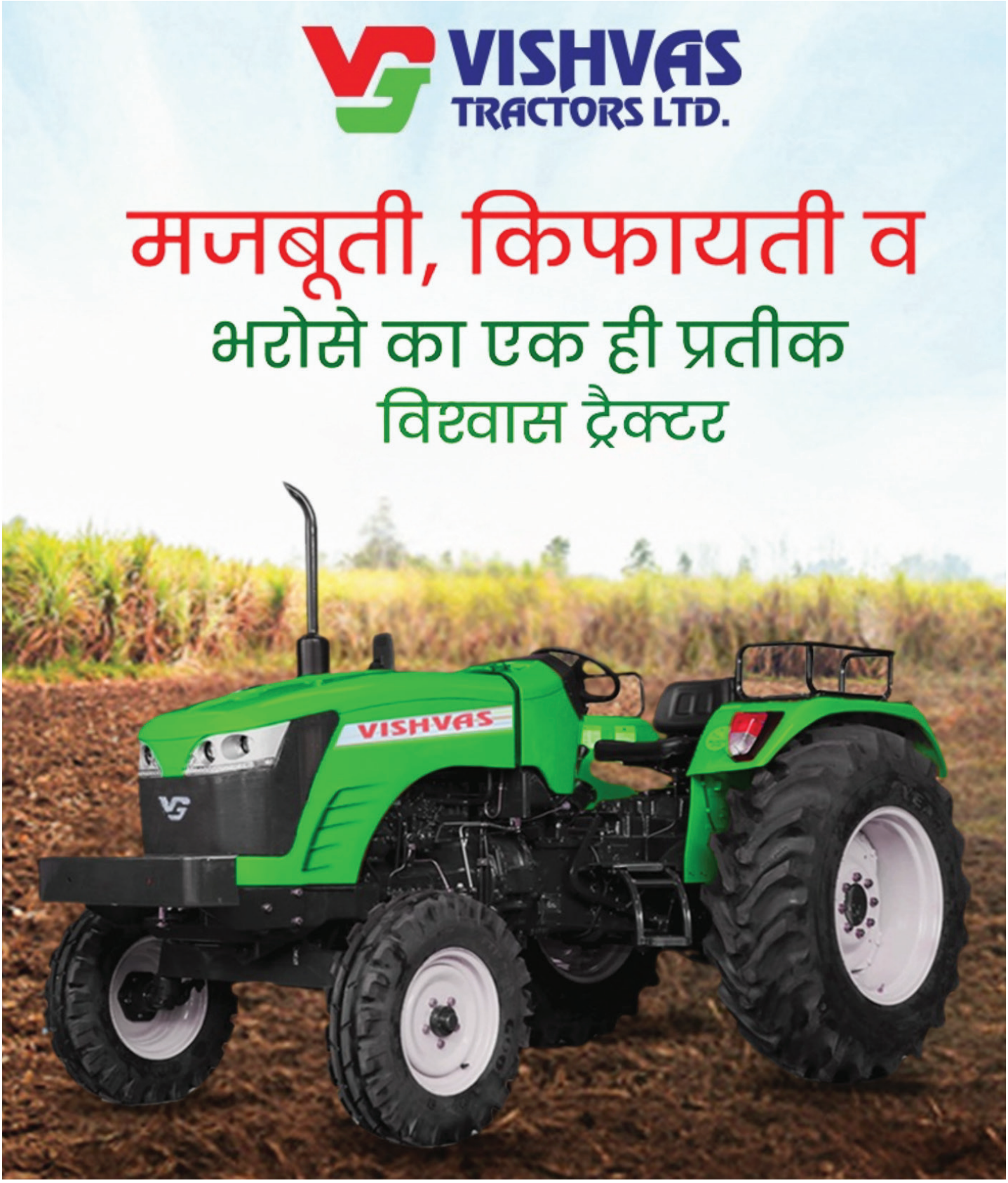

# आंवला की खेती: उन्नत किस्में, जलवायु आवश्यकताएं, और उच्च उत्पादन के तरीके

आंवला फल विटामिन सी का एक समृद्ध स्रोत हैं। सूखे अवस्था में भी विटामिन को बनाए रखने की क्षमता इस पेड़ में देखी गई है, जो अन्य फलों में संभव नहीं है। इसके फलों से विटामिन सी की पूर्ति होती है और सूखा पाउडर सिंथेटिक विटामिन सी से भी बेहतर है। इसकी खेती करके किसान अच्छा मुनाफा कमा इस लेख में हम आपको आंवला की खेती से जुड़ी सम्पूर्ण जानकारी देंगे।

## आंवला पौधे का वानस्पतिक विवरण क्या है? (What is the botanical description of amla plant?)

यूफोरबियासी का सदस्य होने के नाते, जिसमें अधिकांश जेरोफाइट्स और कैक्टि शामिल है, रसीले पौधों से संबंधित, आँवला एक कठोर सूखा प्रतिरोधी फल का पेड़ है। इसमें पानी के ठहराव को भी झेलने की क्षमता है। इसे आंवला, अमली और नेली आदि नामों से भी जाना जाता है। आंवला की उत्पत्ति के संभावित केंद्र दक्षिण मध्य भारत, श्रीलंका, मलेशिया और दक्षिण चीन मानें जाते है।

इसका खांसी, ब्रोंकाइटिस, पीलिया, मधुमेह, अपच, दस्त और बुखार जैसी बीमारियों के इलाज में उपयोग किया जाता है। सौ ग्राम फल में 14 ग्राम कार्बोहाइड्रेट, 0.5 ग्राम प्रोटीन, 1.2 ग्राम आयरन, 0.3 मिलीग्राम विटामिन बी और 600 मिलीग्राम होता है। विटामिन सी., आयरन (1.2 मिलीग्राम/100 ग्राम) और विटामिन बी की उच्च मात्रा के कारण इस के फलों के अर्क का उपयोग कई आयुर्वेदिक और होम्योपैथिक तैयारियों में किया जाता है, ऐसा माना जाता है कि आंवला के सेवन से बालों का सफेद होना और झड़ना रोका जा सकता है।

## आंवले की खेती के लिए जलवायु एवं मिट्टी संबंधी आवश्यकताएँ

आंवला एक उपोष्णकटिबंधीय फल है, लेकिन बड़े पेड़ 0 से 46 डिग्री सेल्सियस तक का तापमान सहन कर सकते हैं। किंतु आंवला के पेड़ अच्छी जल निकासी वाली दोमट मिट्टी में तेजी से बढ़ते हैं। आवला के पेड़ भारी मिट्टी में भी उग सकते हैं। फसल विकास के शुरुआती चरण में भारी बारिश के दौरान हल्की जल निकासी भी की जाती है। पेड़ मिट्टी (पीएच 8.5) और सिंचाई के पानी भी काफी क्षारीयता को सहन करते हैं।

## आंवला की उन्नत किस्में

आंवला की अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए उन्नत किस्मों का चयन करना बहुत अवश्य है। आंवला की उन्नत किस्में निम्नलिखित है –

### 1. चकैया

इस किस्म के फल चपटे, चिकनी त्वचा वाले होते हैं जिनका रंग हरा होता है। फल छोटे से मध्यम आकार के होते हैं जिनका वजन 26 ग्राम होता है और इनका टीएसएस 10.70 होता है।

### 2. बनारसी

इस किस्म के फल आकार में बड़े, चपटे आयताकार, चिकनी त्वचा वाले, पीले रंग के होते हैं। औसतन प्रत्येक फल का वजन 38 ग्राम होता है। पेड़ों को सीधी वृद्धि की आदत होती है।

### 3. कृष्णा: (एनए – 4)

इस किस्म के फल मध्यम से बड़े आकार (40 ग्राम) के शंक्वाकार, कोणीय, चिकने पीले होते है। इसका गूदा रेशे रहित होता है जो अर्धपारदर्शी और कठोर होता है।

### 4. कंचन: (NA–5)

यह चकैया का आकस्मिक अंकुर माना जाता है। इस किस्म के फल मध्यम आकार के (32 ग्राम) चपटे आयता. कार होते है और त्वचा चिकनी, पीले रंग की होती है।

## पौधों की रोपाई के लिए भूमि की तैयारी (land preparation for cultivation of amla)

क्योंकि आंवले का पौधा वर्षों तक फसल देता है इसके लिए खेत को पूरी तरह से तैयार करना चाहिए। ताकि पुरानी फसल के अवशेष पूरी तरह से नष्ट हो जाएं, इसके लिए सबसे पहले खेत को अच्छी तरह से गहरी जुताई करनी चाहिए। जुताई के बाद खेत को कुछ दिनों के लिए खुला छोड़ दें, ताकि सूर्य की रोशनी जमीन पर अच्छी तरह से पड़े। इसके बाद रोटावेटर को खेत में चलाकर फिर से जुताई कर दें। मिट्टी भुरभुरा होने पर पाटा लगाकर खेत को समतल बना ले। इसके बाद खेत में चार मीटर की दूरी पर दो फीट चौड़ा और डेढ़ फिट गहरा गढ्ढे बनाओ। बारह से पंद्रह फीट की दूरी पर पंक्तियां बनाओ। इसके बाद जैविक और रासायनिक उर्वरकों को मिट्टी में मिलाकर गड्डो में भर दें। पौध रोपाई से एक महीने पहले इस गड्डो को तैयार कर लेना चाहिए।

## आंवला की नर्सरी की तैयारी

खेत में आंवला के पौधों को लगाने से एक महीने पहले उन्हें नर्सरी में तैयार कर लिया जाता है। अब पौधों को तैयार किए गए गड्डो के बीच में एक छोटा सा गड्डा बनाकर लगाना चाहिए। इसके बाद पौधों को अच्छी तरह से मिट्टी से दबा दें। सितंबर में आंवला के पौधों को लगाना सबसे अच्छा है क्योंकि इस समय पौधे अच्छे से पकते हैं।

## आंवला की फसल में सिंचाई प्रबंधन

ऑवला के पौधों को खेत लगाने के तुरंत बाद पहली सिंचाई कर देनी चाहिए। इसके बाद गर्मियों के मौसम में सप्ताह में एक बार तथा सर्दियों के मौसम में 15 से 20 दिन में सिंचाई करनी चाहिए। बारिश का मौसम होने पर जरूरत पड़ने पर ही सिंचाई करनी चाहिए। जब पेड़ पर फूल खिलने लगे तब सिंचाई बंद कर देनी चाहिए।

## फसल में उर्वरक प्रबंधन

आंवला के पौधों की अच्छी पैदावार के लिए उचित उवर्रक की जरूरत होती है। इसके लिए गड्डो को तैयार करते वक्त 30 किलो पुरानी गोबर की खाद, 50 ग्राम यूरिया तथा 70 ग्राम डी.ए.पी. और 50 ग्राम एम.ओ.पी. की मात्रा को मिट्टी में मिलाकर अच्छे से गड्डो को भर देना चाहिए। इसके बाद जब पौधे विकास करने लगे तब 40 किलो गोबर की खाद, 1 kg नीम की खली, 100 gm यूरिया, 120 gm डी.ए.पी. तथा 100 gm एम.ओ.पी. की मात्रा को पौधों के पास में छोटा सा गड्डा बना कर भर दे। इस प्रक्रिया के बाद गड्डो की सिंचाई कर देनी चाहिए।

## आंवले की तुड़ाई और पैदावार

पौधे की खेत में रोपाई के लगभग 3 से 4 साल बाद इसके पौधे पैदावार देना आरम्भ करते है। फूल लगने के 5 से 6 महीने पश्चात इसके फल पककर तैयार होने लगते है। शुरुआत में इसके फल हरे रंग के दिखाई देते है, इसके बाद ठीक तरह से पकने पर यह हल्का पीले रंग का हो जाता है। उस दौरान फलों की तुड़ाई कर ले, पूर्ण रूप से तैयार आंवला के एक पौधे में तकरीबन 100 से 120 KG फल तैयार हो जाते है। इस हिसाब से एक एकड़ के खेत में लगभग 150 से 180 पौधों को लगाया जा सकता है। जिसका कुल उत्पादन 20,000 किलो के आस–पास होता है। आंवला का बाजारी मूल्य गुणवत्ता के आधार पर 15 से 30 रूपए किलो तक का होता है। किसान भाई एक एकड़ भूमि में आंवला की खेती कर दो से तीन लाख की अच्छी कमाई कर सकते है।


मेरीखेती अब 6 भाषाओ में उपलब्ध है

हिंदी | English | తెలుగు (Telugu) | ಕನ್ನಡ (Kannada) | ਪੰਜਾਬੀ (Punjabi) | தமிழ் (Tamil)

www.merikheti.com

# सहजन की खेती से किसानों को मिलेगा अच्छा मुनाफा, जानें वजह

खेती किसानी में एक अच्छी आय की असीमित संभावनाएं और अवसर हैं। आप कुछ अलग करते हैं तो आप इससे काफी मुनाफा कमा सकते हैं। सरकार भी पारंपरिक खेती से अलग हटकर नए विक. ल्पों की ओर देखने के लिए कृषकों को प्रोत्साहित कर रही है। अगर आप भी खेती–किसानी करते हैं और कृषि क्षेत्र में कुछ अलग हट कर करना चाहते हैं, तो आपके लिए औषधीय गुणों से भरपूर सहजन की खेती करना एक बेहतरीन विकल्प साबित होगा। सहजन की देखरेख और लागत में कमी के कारण इससे काफी अच्छी आमदनी होती है। किसान भाई इसकी खेती से लखपति तक बन रहे हैं। औषधीय पौधों की खेती के लिए सरकार की ओर से दी जाने वाली सुविधाएं सहजन की खेती के लिए भी उपस्थित हैं।

## जाने वाली सुविधाएं सहजन की खेती के लिए भी उपस्थित हैं।

सहजन की खेती से क्या–क्या फायदे हैं ? सहजन की खेती कम से कम जमीन पर हो सकती है। सजहन की खेती में लागत काफी कम आती है, जिसकी वजह से कृषकों को शानदार आय होती है। सहजन का एक पेड़ कम से कम 10 वर्षों तक फल प्रदान करता है। सहजन के पेड़ का हर भाग काफी लाभदायक होता है और उसकी बिक्री होती है। सहजन के पत्ते, छाल, तना यहां तक की इसकी जड़ भी बिक जाती है। वहीं अगर हम सहजन की विशेषताओं की बात करें तो इसके एक बार बीज की बुवाई करने के बाद चार वर्षों तक चलता है। मतलब कि चार वर्ष तक बुवाई करने की जरूरत नहीं होती। साथ ही, कोई विशेष ध्यान रखने की आवश्यकता नहीं होती है।

## सहजन की खेती के लिए क्या जरूरी है ?

दरअसल, ठंडे राज्यों में सहजन की खेती करने में बेहद कठिनाई आती है। इसके फूल को खिलने के लिए 25 से 30 डिग्री तक का तापमान की जरूरत होती है। डीडी किसान के मुताबिक, सूखी बलुई मृदा या चिकनी बलुई मृदा में सहजन सही तरह से बढ़ता है। भारत में ठंडे राज्यों को छोड़कर लगभग हर हिस्से के किसान इसकी खेती कर सकते हैं। बतादें, कि कोयंबटूर 2, रोहित 1, पी के एम 1, पी के एम– 2 सहजन की प्रमुख उन्नत किस्में हैं।

## सहजन का उपयोग किन चीजों में होता है ?

सहजन को एक तरह से प्रकृति का वरदान माना जाता है। इसकी सब्जी से तो हम सब परिचित हैं। इसके अतिरिक्त भी सहजन का उपयोग बहुत सारे अन्य कार्यों में भी होता है। सहजन के बीज के तेल से औषधियां निर्मित होती हैं। छाल, पत्ती, गोंद और जड़ इत्यादि से आयुर्वेदिक औषधियां निर्मित होती हैं।

## किसान भाई सहजन की खेती इस प्रकार करें ?

सहजन की खेती के लिए बीज को दिन के समय भिगो दिया जाता है। किसान भाई इसकी बुवाई सूखी मृदा में कर सकते हैं। सहजन की बुवाई के लिए जमीन को 1 फुट चौड़ा और गहरा करना होता है, वहां बुवाई होती है। फिर मिट्टी से भरना होता है। बतादें, कि बुवाई नर्सरी पौधों और बीजों दोनों की होती है। मतलब, आप बीज से नर्सरी पौधा बनाकर भी बुवाई कर सकते हैं। सहजन को शुरुआत में खाद की आवश्यकता होती है। फिर इसके बाद थोड़ी सी सिंचाई की। सहजन के आधा किलो बीज से 2 हेक्टेयर जमीन के लिए पौध तैयार कर सकते हैं। किसान भाई 1500 से 2000 पौधे 1 एकड़ भूमि में उगा सकते हैं।

## सहजन के अंदर क्या–क्या गुण होते हैं ?

सहजन को अंग्रेजी में ड्रमस्टिक कहते हैं। इसका वानस्पतिक नाम मोरिंगा ओलिफरा है। यह एक बहुपयोगी पौधा है। इसमें बहुत सारे 300 से ज्यादा औषधीय गुण पाए जाते हैं। इसी वजह से इसकी निरंतर मांग बढ़ रही है। सहजन की खेती करने वाले कृषक लाखों रुपए की आमदनी कर रहे हैं। सहजन में 90 प्रकार के मल्टीविटामिन्स होते हैं। सहजन में 45 प्रकार के एंटीऑक्सीडेंट गुण विघमान होते हैं। सहजन में 35 तरीके के दर्द निवारक गुण विघमान होते हैं। सहजन में 17 प्रकार के एमिनो एसिड होते हैं।

# गाय की इस नस्ल का पालन करने पर पशुपालकों को मिल सकती है सब्सीडी

खेती के सात साथ किसान पशुपालन करके भी अपनी आमदनी बढ़ा सकते है। पशुपालन के अंदर ज्यादातर गाय और भैंस जैसे दुधारू पशुओं का पालन किया जाता है। पशुपालक को गाय की उत्तम किस्म का चयन करना चाहिए ताकि अधिक दूध प्राप्त किया जा सके। गाय की ऐसी बहुत सी नस्ल है जिनसे अच्छा दूध प्राप्त किया जा सकता है। ऐसी ही गाय की नस्ल मे से एक नस्ल है साहीवाल।

साहीवाल गाय को अधिक दूध देने वाली गाय माना जाता है यदि गाय का अच्छे से रखरखाव किया जाए तो प्रतिदिन गाय से 10 से 16 लीटर दूध प्राप्त किया जा सकता है। साहीवाल नस्ल की गाय का ज्यादातर पालन हरियाणा और राजस्थान मे किया जाता है। यदि आप भी दूध के अधिक उत्पादन के लिए डेयरी खोलना चाहते है तो उसके लिए साहीवाल गाय का ही चयन करें। बहुत से पशुपालक साहीवाल गाय का पालन करके अपनी इनकम बढ़ा रहे है। इसके अलावा सरकार द्वारा देशी गाय के पालन के लिए सब्सीडी भी प्रदान की जा रही है।

## कैसे करें साहीवाल गाय की पहचान

साहीवाल गाय की पहचान करना काफी सरल है, साहीवाल गाय की पहचान उसके शरीर की बनावट, सींघो और गाय की रंग से आसानी से की जा सकती है।

- साहीवाल गाय की सींघ दिखने मे छोटे और मोटे होते है।
- साहीवाल गाय की गर्दन की नीचे खाल की एक मोटी परत लटकी हुई होती है।
- इस नस्ल की गाय के शरीर का आकर मध्यम और माथा आगे से चौड़ा होता है।
- साहीवाल गाय का रंग गहरे भूरे और लाल रंग का होता है, इसके शरीर पर सफेद रंग के चमकदार धब्बे भी होते है।
- इस नस्ल की गाय के पीठ पर बने कूबड़ की ऊंचाई 120 सेंटीमीटर होती है।
- साहीवाल नस्ल की इस गाय का वजन 300 से 400 किलोग्राम होता है।

## साहीवाल गाय की विशेषताएं क्या है ?

साहीवाल गाय की बहुत सी ऐसी विशेषताएं है जो इसे अन्य गायों से अलग बनाती है , आइये बात करते है साहीवाल गाय की विशेषताओं के बारे मे।

- साहीवाल गाय की इस नस्ल को अन्य गायों की तुलना मे अधिक दूध देने वाली गाय माना गया है।
- साहीवाल गाय एक ब्यात पर 10 महीने तक दूध देती है , पुरे ब्यांत मे यह 2270 लीटर दूध देती है।
- रोजाना की बात करें यह गाय प्रतिदिन 10 से 16 लीटर दूध देती है।
- अन्य गायों की तुलना मे इस गाय के दूध मे प्रोटीन और वसा ज्यादा मात्रा मे पायी जाति है।
- गर्म इलाकों मे भी यह गाय आसानी रह सकती है।
- साहीवाल गाय के रखरखाव पर ज्यादा खर्च नहीं करना पड़ता है , इसे आसानी से कोई भी पशुपालक पाल सकता है।
- इस नस्ल की गाय की प्रजनन अवधी मे 15 महीने का समय अंतराल होता है।

## साहीवाल गाय की कीमत

किसी गाय की कीमत उसकी दूध देने की क्षमता, उम्र और नस्ल पर निर्भर करती है। ऐसे मे साहीवाल गाय की कीमत 40000 से 60000 रुपए तक है।

## साहीवाल गाय की खरीद पर कितनी सब्सीडी मिल रही है ?

सरकार द्वारा किसानों को देसी गायों की खरीद के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। इसके अलावा गाय पालन को बढ़ावा देने के लिए बिहार सरकार द्वारा गौपालन प्रोत्साहन योजना 2023 –2024 चलाई जा रही है।

इस योजना के अंतर्गत अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति को गौपालन के लिए डेरी लगाने के लिए 75% सब्सीडी प्रदान की जा रही है। इसके अलावा सामान्य वर्ग के लोगो को 40% सब्सिडी प्रदान की जा रही है।

### कहाँ से खरीदे साहीवाल गाय की उन्नत नस्ल

साहीवाल गाय भारत के उत्तर दिशा मे सबसे ज्यादा पायी जाती है। इस नस्ल की गाय का उद्गम स्थल रावी नदी के आसपास और पाकिस्तान पंजाब के मोंटगोमरी जिला माना जाता है। साहीवाल गाय सबसे अधिक दूध देने वाली गाय मे से एक है , ज्यादातर यह नस्ल पंजाब के फिरोजपुर और अमृतसर जिलों मे पायी जाती है। राजस्थान के गंगानगर और फिरोजपुर जिले के फाजिलका और अबोहर कस्बे मे इस गाय की नस्ल को पाला जाता है।

# चारे की कमी को दूर करने के लिए लोबिया की खेती की महत्वपूर्ण जानकारी

खरीफ फसलों की बुवाई का समय चल रहा है। अब ऐसे में लोबिया की खेती लघु कृषकों के लिए एक वरदान सिद्ध हो सकती है। भारत में लघु और सीमांत कृषकों की संख्या काफी ज्यादा है, जिनके पास काफी कम भूमि है। ऐसे कृषकों के लिए लोबिया की खेती काफी फायदेमंद साबित हो सकती है। लोबिया एक दलहनी फसल की श्रेणी में आने वाली एक फसल है। इसकी खेती खरीफ और जायद दोनों ही सीजन में की जा सकती है। इसकी खेती करने से कृषकों को दो तरह के फायदे हो सकते हैं। एक तो किसान इसे सब्जी के तोर पर प्रयोग कर सकते हैं और दूसरा इसे पशुओं के चारे में इस्तेमाल किया जा सकता है।

### लोबिया से आप क्या समझते हैं ?

लोबिया एक ऐसी फली होती है, जो कि तिलहन की श्रेणी के अंतर्गत आती है। इसको बोड़ा, चौला या चौरा के नाम से भी जाना जाता है और इसका पौधा सफेद रंग का और काफी बड़ा होता है। लोबिया की फलियां पतली और लंबी होती हैं। साथ ही, इसका उपयोग सब्जी निर्मित करने और पशुओं के चारे के लिए किया जाता है।

### लोबिया की खेती के लिए उपयुक्त जलवायु

लोबिया की खेती करने के लिए गर्म व आर्द्र जलवायु की आवश्यकता होती है। बतादें, कि इसकी खेती करने लिए 24–27 डिग्री के बीच के तापमान की जरुरत होती है। अत्यधिक कम तापमान होने पर इसकी फसल पूर्णतय नष्ट हो सकती है। इसलिए लोबिया की फसल को अधिक ठंड से बचाना चाहिए।

### लोबिया की खेती के लिए उपयुक्त मिट्टी

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि लोबिया की खेती हर प्रकार की मिट्टी में आसानी से की जा सकती है। मगर एक बात का खास ध्यान रखें कि इसके लिए छारीय मृदा नहीं होनी चाहिए।

### लोबिया की उन्नत किस्में इस प्रकार हैं

दरअसल, लोबिया की कई उन्नत किस्में हैं, जो कि बहुत अच्छा उत्पादन देती हैं। जैसे – सी– 152, पूसा फाल्गुनी, अम्बा (वी– 16), स्वर्णा (वी– 38), जी सी– 3, पूसा सम्पदा (वी– 585) और श्रेष्ठा (वी– 37) आदि प्रमुख किस्में हैं।

### लोबिया की बुवाई के लिए उपयुक्त समय

अगर हम लोबिया की बुवाई के विषय में बात करें, तो बरसात के मौसम में जून महीने के अंत तक इसकी बुवाई की जाती है। वहीं, इसकी फरवरी से लेकर मार्च माह तक बुवाई की जाती है।

### लोबिया की बुवाई करने के लिए बीज की मात्रा

लोबिया की बुवाई करते समय यह ध्यान रखना विशेष जरूरी है, कि उसकी मात्रा ज्यादा न हो। इसकी बुवाई के लिए सामान्यतरू 12–20 कि.ग्रा. बीज/हेक्टेयर की दर से पर्याप्त माना जाता है। इसकी बेल वाली किस्मों के लिए बीज की मात्रा थोड़ी कम लगती है। साथ ही, मौसम के हिसाब से बीज की मात्रा का निर्धारण किया जाना चाहिए।

## लोबिया की बुवाई करने का उत्तम तरीका क्या है ?

लोबिया की बुवाई करने के दौरान इस बात का ध्यान रखना विशेष आवश्यक है, कि इसके बीज के बीच समुचित दूरी होनी जरूरी है। जिससे कि जब इसका पौधा उगे, तो वह ठीक ढ़ंग से विकास कर सके। दरअसल, लोबिया की बुवाई करते वक्त उसकी किस्म के अनुरूप फासला रखा जाता है। जैसे– झाड़ीदार किस्मों के बीज के लिए एक कतार से दूसरी कतार की दूरी 45–60 सेमी होनी चाहिए। बीज से बीज का फासला 10 सेमी तक होना चाहिए। वहीं, इसकी बेलदार किस्मों के लिए लाइन से लाइन का फासला 80–90 सेमी रखना सही होता है।

## लोबिया में खाद की मात्रा की जानकारी

लोबिया की खेती करने के लिए खाद की बड़ी महत्ता होती है। ऐसे ही लोबिया की खेती करने के लिए खाद अत्यंत आवश्यक है। लोबिया की फसल उगने से कुछ इस तरह से खाद डालनी चाहिए। एक महीने पहले खेत में 20–25 टनगोबर या कम्पोस्ट डालें, 20 किग्रा नाइट्रोजन, फास्फोरस 60 कि.ग्रा. तथा पोटाश 50 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर के हिसाब से खेत में जुलाई के अंत में ही डाल दें। साथ ही, नाइट्रोजन की 20 कि.ग्रा. की मात्रा फसल में फूल आने के दौरान देनी चाहिए।

## लोबिया की खेती में सिंचाई प्रबंधन

लोबिया की फसल को खरीफ के सीजन में सिंचाई की ज्यादा आवश्यकता नहीं पड़ती है। इसलिए खरीफ के सीजन में उतना ही पानी देना चाहिए, जिससे कि मृदा में नमी बरकरार बनी रहे। वहीं, गर्मी की फसल की बात करें तो सामान्यतः किसी भी फसल में पानी की अधिक आवश्यकता होती है। यदि लोबिया की बात करें, तो इसमें 5 से 6 पानी की आवश्यकता पड़ती है।

ताकत, किफायत और भरोसे के साथ
प्रीत सुपर ही है
सबसे ऊपर
PREET
SUPER
9049 4WD
PREET
PREET
#BetterFutureIsHere

MERIKHETI

# किसानो की बात
# मेरी खेती के साथ

www.merikheti.com

Contact No : +91 8800777501
Address : 5A-46, 6th Floor, Cloud 9 Tower, Vaishali,
Sector -1, Ghaziabad - 201010